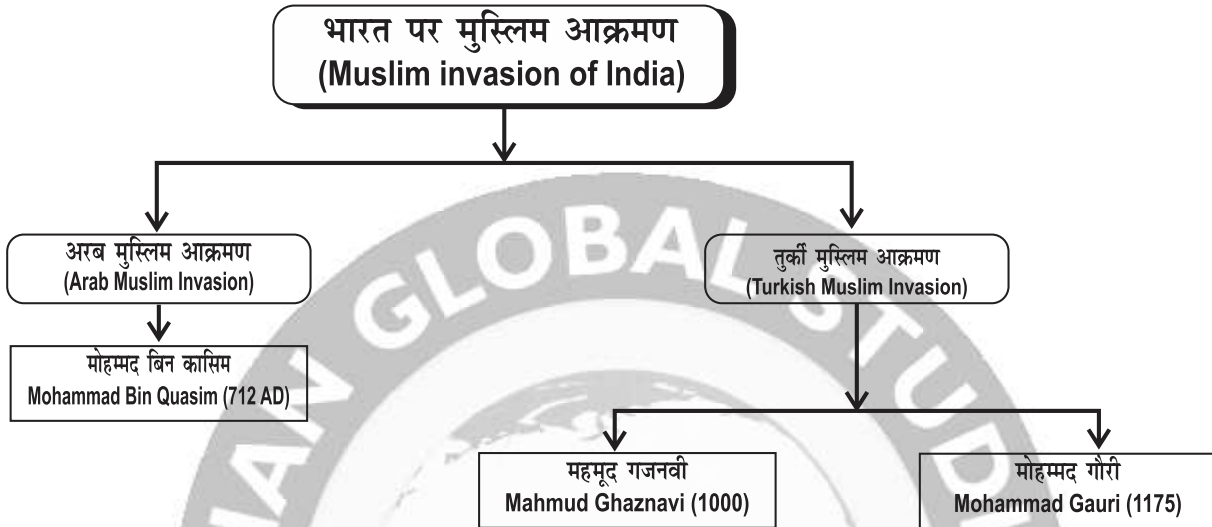


01.

भारत पर मुस्लिम आक्रमण (Muslim invasion of India)



भारत पर अरब मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर पहला सफल आक्रमण करने वाला अरब का मुस्लिम शासक **मोहम्मद-बिन-कासिम** था।
- इसने 712 ई. में रावड़ के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया। राजा दाहिर 'चच' का वंशज था। उस समय सिंध की राजधानी ब्राह्मणवाद/आरोह थी।
- अरबों की सिंध विजय का प्रमाण फारसी ग्रंथ 'चचनामा (फतहनामा)' नामक ग्रंथ में मिलता है। जिसकी रचना 'अली अहमद' ने किया। इस पुस्तक की अरबी भाषा में रचना अबु मुआसिर ने किया।
- इसका भारत पर आक्रमण करने का उद्देश्य धन-दौलत लूटना और इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था न कि राज्य विस्तार का।
- मोहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान को जीत लिया और यहाँ से उसे इतना अधिक सोने का भंडार मिला कि मुल्तान को इतिहास में 'स्वर्ण नगरी' कहा जाने लगा।
- इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी "अलमन्सूरा" को बनाया।
- मोहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण के फलस्वरूप अरबी संस्कृति को भारतीयों ने और कुछ भारतीय संस्कृति को अरबवासियों ने अपनाया।
- अरब और हिन्दु संस्कृति के मिश्रण के परिणामस्वरूप अरबवासियों ने भारत से खगोलशास्त्र, अंकगणित, चिकित्साशास्त्र और दर्शन के क्षेत्र में बहुत कुछ सिखा और इसका प्रचार-प्रसार पूरे यूरोप में किया।

- सर्वप्रथम अरबवासियों (मुस्लिमों) ने भारतीयों को हिन्दू कहकर संबोधित किया था और इस देश का नाम हिन्दुस्तान कहा था। अरब आक्रमण के फलस्वरूप भारत में पर्दा-प्रथा का तीव्र गति से विकास हुआ। इसके साथ ही जजिया, जकात और खराज (भू-राजस्व) नामक कर के बारे में जानकारी प्राप्त हुआ।
 - मोहम्मद-बिन-कासिम** ने भारत में सर्वप्रथम जजिया कर लगाया।
 - जजिया गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।
 - मुहम्मद बिन कासिम ने जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा-**
 - बच्चा
 - बूढ़ा
 - ब्राह्मण
 - विकलांग
 - औरत
 - फिरोज-शाह-तुगलक** ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
 - मुगल बादशाह अकबर ने 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया।
 - औरंगजेब** ने 1679 ई. में पुनः जजिया कर लगा दिया।
- नोट:-** एकमात्र मुगलबादशाह औरंगजेब थे जिसने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूला।

- जजिया कर को अंतिम रूप से **मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह)** ने समाप्त किया।
- अरबों ने सिंध में ऊंट पालने की प्रथा तथा खजूर की खेती को प्रारंभ किया।
- चचनामा ग्रंथ के अनुसार सुलेमान के आदेश पर मुहम्मद बिन कासिम की हत्या करवा दी गई थी।

भारत पर तुर्क आक्रमण

- भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का श्रेय तुर्कों को दिया जाता है।
- तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिम सीमाओं पर निवास करने वाले एक लड़ाकू एवं बर्बर जाति था। जो उमैय्या वंशी शासकों के संपर्क में आने के बाद ईस्लाम धर्म अपना लिया। उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।
- अलप्तगीन ने 932 ई. में अफगान प्रदेश में गजनी साम्राज्य की स्थापना किया। जिसकी राजधानी गजनी थी।
- गजनी वंश का अन्य नाम यामिनी वंश भी है।
- भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक जयपाल शासन कर रहा था।
- सुबुक्तगीन अलप्तगीन का गुलाम था। जो बाद में अलप्तगीन का दामाद बना।
- इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर में पराजित कर दिया।

महमूद गजनवी

- सुबुक्तगीन का पुत्र महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सर हेनरी इलियट के अनुसार इसने 1000 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार भारत पर आक्रमण किया।
- इसने मध्य एशिया में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना के लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया।
- इसने 1001 ई. में पंजाब के हिन्दूशाही वंश के ऊपर आक्रमण किया। उस समय इसकी राजधानी वैहिंद अथवा उदभाण्डपुर थी। इस समय यहाँ के शासक जयपाल थे।
- जयपाल एकमात्र शासक है जो पराजित होने पर आत्महत्या कर लिया।
- महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता था।
- भारत में महमूद गजनवी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान 1025 से 1026 में सोमनाथ मंदिर (गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत) पर आक्रमण था। यह एक शिव मंदिर था।
- उस समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था। इस युद्ध में 50 हजार से अधिक लोग मारे गए थे। महमूद इस मंदिर को पूर्णतः नष्ट कर दिया तथा इसकी कुल संपत्ति को लेकर सिंध के रेगिस्तान से वापस लौट गया।

- 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर दिया। क्योंकि सोमनाथ को लूटकर वापस जाते समय महमूद को जाटों ने क्षति पहुँचायी थी।
- फारूखी, उत्बी, फिरदौसी और अलबरूनी जैसे विद्वान गजनवी के दरबार में रहते थे।
- उत्बी ने किताब-उल-यामिनी की रचना की थी।
- उत्बी ने महमूद गजनवी के आक्रमणों को जेहाद की संज्ञा दी है।
- फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरूनी ने अरबी भाषा में किताबुल हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) लिखा।

तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण (महमूद गौरी)

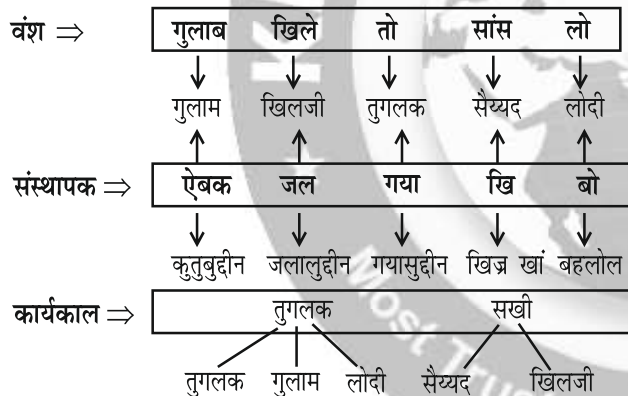
- तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- इसके दूसरे चरण का नेतृत्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- इसका पूरा नाम मोहम्मद गौरी या मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन शाम (शिहाबुद्दीन) था। इसे गौर वंश का मोहम्मद भी कहा जाता है।
- गौर वंश में जो प्रधान था उसका नाम शंसबिन था। मोहम्मद गौरी इसी वंश का शक्तिशाली शासक था।
- 1178 ई. में इसने पाटन (गुजरात) पर आक्रमण किया उस समय वहाँ चालुक्य वंशीय शासक भीम-II (मूलराज्य द्वितीय) का शासन था। जो गौरी को बुरी तरह परास्त किया।
- यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी अर्थात् मोहम्मद गौरी की भारत में पहली पराजय थी।
- इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो पृथ्वीराज चौहान-III से विवाद हो गया।
- 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान-III ने गौरी को पराजित कर दिया। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान का सेनापति स्कन्द था।
- 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से पृथ्वीराज चौहान-III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- 1194 ई. के चंदावर के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित कर दिया।
- मोहम्मद गौरी का गुलाम तथा कुतुबुद्दीन ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी को माना जाता है। बख्तियार खिलजी ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाई थी।
- मोहम्मद गौरी का कोई पुत्र नहीं था तथा जयचंद को पराजित करने के बाद गोरी द्वारा भारत में जीते गए प्रदेशों को कुतुबुद्दीन ऐबक को सौंप कर वापस गजनी लौट गया।
- **मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे—**
 - कुतुबुद्दीन ऐबक
 - याल्दोज
 - कुबाचा।

Note :— भारत में कागज का उपयोग 12वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था।

दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

- 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक के कुल 320 वर्षों तक दिल्ली पर मुस्लिम सुल्तानों का शासन रहा।
- भारत पर शासन करने वाले पाँच वंश के सुल्तानों के शासनकाल को दिल्ली सल्तनत या सल्तनत-ए-हिन्द/सल्तनत-ए-दिल्ली कहा जाता है।
- ये पाँच वंश निम्न थे—
 - गुलाम वंश (1206-1290)
 - खिलजी वंश (1290-1320)
 - तुगलक वंश (1320-1414)
 - सैयद वंश (1414-1451)
 - लोदी वंश (1451-1526)
- इनमें से चार वंश मूलतः तुर्क थे जबकि अंतिम वंश अफगान था।

Trick :-



गुलाम वंश (1206 ई.-1290ई.)

- इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।
- इस वंश को इलबरी, ममलूक या दास कहा जाता है।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.-1210 ई.)

- ऐबक मुहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलामों में से एक था।
- मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद ऐबक 1206 में स्वयं को लाहौर का स्वतंत्र शासक घोषित किया।
- ऐबक ने अपनी राजधानी की लाहौर को बनाया था।
- दिल्ली का प्रथम मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक था।
- ऐबक को दिल्ली का पहला तुर्क शासक माना जाता है।

- इन्होंने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की, न ही अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और ना ही अपने नाम के सिक्के चलाये बल्कि इन्होंने केवल मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अतः इन्हें हातिम कहा गया।
- ये लाखों में दान देते थे। अपनी असीम उदारता के कारण इन्हें लाख बख्श भी कहते हैं।
- इन्हें पूरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- इनके दरबार में मिनहाज-उस-सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात-ए-नासरी पुस्तक लिखी है।
- इनके दरबार में हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज-ऊल-नासिर पुस्तक लिखी है।
- ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद बनवायी।
- इण्डो ईस्लामिक कला का सबसे पहला उदाहरण कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में मिलता है।
- ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे।
- कुतुबमीनार बख्तियार काकी के याद में ऐबक द्वारा बनवाया गया था।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु हो गई।
- ऐबक का सहायक सेनापति बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक का मकबरा लाहौर में है।

शम्सी वंश (इल्तुतमिश 1211 ई.-1236 ई.)

- इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- 1215 के तराईन के तृतीय युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- इसने अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली को बनाया।
- इसने शासक बनने के लिए 1229 ई. में खलिफा अल मुनतसीर बिल्लाह से खिल्लत (Degree) हासिल की।
- इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरुद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गद्दी में बनवाया।
- इल्तुतमिश ने भारत में इक्ता व्यवस्था का प्रारंभ की। इक्ता एक अरबी शब्द है।

- इक्ता व्यवस्था में कर्मचारियों को वेतन के बदले भूमि दिया जाता था।
- इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहाकर परिषद् बनाया जिसे तुर्कान-ए-चिहलगानी या चालीसा दल कहते हैं।
- इसके समय ख्वाजरिज्म के शासक जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अतः इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- यह शुद्ध अरबी सिक्का चलाने वाला प्रथम शासक था।
- इसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- 1236 ई. को इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुल्तान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

रजिया सुल्तान (1236 ई.-1240 ई.)

- यह भारत की प्रथम महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भाँति वस्त्र कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरबार आने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।
- दिल्ली के जलालुद्दीन याकूत (अश्वशाला का प्रधान) के साथ रजिया का घनिष्ठ संबंध थे। इसे अमीर-ए-आखुर नियुक्त किया।
- तवरहिन्द (भटिंडा-पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।
- दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- इतिहासकारों (एल्फिंस्टन) का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।
- इतिहासकार (मिनहाज) कहना है कि “भाग्य ने उसे पुरुष नहीं बनाया वरना उसके समस्त गुण उसके लिए लाभप्रद हो सकते थे। रजिया में वे प्रशंसनीय गुण थे जो एक सुल्तान में होना चाहिए।”

बलबन (1266 ई.-1286 ई.)

- बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था, वह इलबरी जाति का तुर्क था।
- उलुग खाँ की उपाधी बलबल को सुल्तान नासिरुद्दीन शाह ने दिया था।
- यह इरान का रहने वाला था।

- इसका पूरा नाम गयासुद्दीन बलबन था।
- दिल्ली के सुल्तान का पद संभालने से पहले बलबन नासिरुद्दीन सुल्तान का प्रधानमंत्री था।
- इसने सिजदा (घुटने पर बैठकर शीश नवाना) तथा पैबोस (पांव को चूमना) जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- इसने नौरोज त्यौहार (फारसी) भी प्रारंभ किया।
- इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- बलबन के राजत्व सिद्धांत का स्वरूप इरान के फारसी तत्वों से लिया गया है, इसके अंतर्गत बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि मानता था।
- बलबन कहता था कि सुल्तान नियाबत-ए-खुदाई एवं जिल्ल-ए-इलाही है।
- इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- इसने ‘लौह एवं रक्त’ की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- बलबन ने नायब के पद को भी समाप्त कर दिया, और वजीर के अधिकार को भी सीमित कर दिया।
- बलबन ने U.P. में एक गढ़-मुक्तेश्वर मस्जिद बनवायी।
- प्रथम बार ईमारतों में मौजूद शाही मेहराब बलबन के मकबरा में देखा गया था।
- बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने दरबार में गैर-इस्लामिक प्रथाओं का प्रचलन किया। इसी के समय सेना को वंशानुगत बना दिया था।
- इसने दीवान-ए-अर्ज नामक सैन्य विभाग की स्थापना किया।
- फारसी कवि अमिर खुसरो और अमिर हसन बलबन के दरबार में रहते थे।
- 1286 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलालुद्दीन खिलजी भी कहते हैं।

खिलजी वंश (1290 ई.-1320 ई.)

जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी (1290 ई.-1296 ई.)

- खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी थे।
- इनकी राजधानी किलोखरी थी।
- इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप ही शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
- इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
- जलालुद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या (1296 ई. में) कड़ा मनीकपुर (इलाहाबाद) में कर दी।

अलाउद्दीन खिलजी (1296ई.-1316ई.)

- ☞ इसके बचपन का नाम अली गुर्शास था।
- ☞ इनका राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में हुआ था।
- ☞ इसने सिकंदर की भांति विश्व विजय का अभियान चलाया। अतः इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदर-ए-सानी कहते हैं।
- ☞ इसने खलीफा के पद को मान्यता दिया।
- ☞ यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा अनाउल्लमुल्क (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह निर्णय बदल दिया।
- ☞ इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई-मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु यह बहुत छोटा बन पाया।
- ☞ इसने कुब्त-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक दरवाजा बनवाया।
- ☞ इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।
- ☞ अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की परंपरा एवं हुलिया लिखने की प्रथा लागू की।

अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान

- ☞ अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारत दोनों का अभियान किया।
- ☞ इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- ☞ अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक राय कर्ण को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खां कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दीनार में मलिक काफूर (चंदराम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- ☞ मलिक काफूर को हजार दीनारी भी कहते हैं।
- ☞ चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावती के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।
- ☞ राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- ☞ अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मलिक काफूर को दिया।
- ☞ 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिया। प्रताप रूद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई और उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनता स्वीकार कर ली।
- ☞ 1310 ई. में मलिक काफूर ने होयसल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारसमुद्र को नहीं जीत सका।
- ☞ अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि 'मेरे घर में 10 दरवाजे हैं'।

अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति-

1. जफर खां
2. नुसरत खां
3. उलुग खां
4. मलिक काफूर

- ☞ यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलीफा से करता था।
- ☞ अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमण को रोकने के लिए उलुग खाँ, जफर खाँ तथा नुसरत खाँ सेनापतियों की सहायता ली।
- ☞ मंगोलों से लड़ते समय जफर खाँ की मृत्यु 1299 ई. हो गई थी।
- ☞ अलाउद्दीन की समय में अंतिम मंगोल आक्रमण 1307 ई. में हुआ।
- ☞ इसी के शासन काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुआ।
- ☞ इसके समय दिल्ली में हाजियों द्वारा विद्रोह किया गया था।
- ☞ अमीर खुसरो के प्रसिद्ध पुस्तक खजायनुल-फुतूह में इसे द्वितीय सिकंदर कहा गया।
- ☞ यह बिना खलीफा के स्वीकृति से गद्दी पर बैठने वाला प्रथम शासक था।
- ☞ 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई। उसे दिल्ली की जामा मस्जिद के बाहर मकबरे में दफनाया गया।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316 ई.-1320 ई.)

- ☞ इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- ☞ बरनी के अनुसार यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- ☞ खिलजी वंश का सेनापति या मुख्यमंत्री खुसरो खाँ ने इसकी हत्या 1320 ई. में कर दी और खुद शासक बन गया।
- ☞ इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हो गया।
- ☞ खिलजी वंश का कार्यकाल सबसे छोटा था।

तुगलक वंश (1320 ई.-1414 ई.)

- ☞ सल्तनत के इतिहास में तुगलक वंश के शासकों ने ही सबसे अधिक 1320 ई. से 1414 ई. तक अर्थात् 94 वर्षों तक शासन किया।

गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई.-1325 ई.)

- ☞ गाजी मल्लिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और गयासुद्दीन तुगलक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- ☞ यह किसानों के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। अतः इसे नहरों का जनक या पिता माना जाता है। हालांकि सर्वाधिक नहरों का जाल बिछाने का कार्य फिरोजशाह तुगलक ने किया था।
- ☞ गयासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौना खान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।

- ☞ जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- ☞ इस विजय के बाद जौना खान को **मुहम्मद बिन तुगलक** कहा गया।
- ☞ गयासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- ☞ इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखे।
- ☞ इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि 'हुनूज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात् हुजूर दिल्ली अभी दूर है और वास्तव में हुआ भी वही गयासुद्दीन के दिल्ली आने से पूर्व ही उसका देहांत हो गया।
- ☞ **मुहम्मद बिन तुगलक** ने उत्तरप्रदेश के अफगानपुर में गयासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किन्तु इस महल के गिरने से गयासुद्दीन तुगलक की 1325 ई. में मृत्यु हो गई।
- ☞ यह गाजी का उपाधि धारण करने वाला प्रथम सुल्तान था।
- ☞ गयासुद्दीन तुगलक पर 29 बार मंगोल का आक्रमण हुआ था।
- ☞ सुलतान गयासुद्दीन का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल का था। इस अभियान के वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरि सिंह देव को हराया था।
- ☞ इसके काल में डाक विभाग सर्वोच्च थी।
- ☞ गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर रोमन शैली में तुगलकाबाद नामक नगर स्थापित किया।

मुहम्मद बिन तुगलक

- ☞ इसका वास्तविक (मूल) नाम जौना खां या उलुग खां था।
- ☞ मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था।
- ☞ यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।
- ☞ मुहम्मद बिन तुगलक को अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण स्वप्नशील, पागल एवं रक्तपिपासु कहा गया।
- ☞ यह इतिहास में सबसे पढ़ा-लिखा शासक था।
- ☞ इसके समय सल्तनत काल की विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।
- ☞ इसके समय साम्राज्य को 29 प्रांतों में बांटा गया था।

➤ **मुहम्मद बिन तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ—**

1. इसने दोआब पर तब करबढ़ा दिया जब वहाँ अकाल पड़ा था। दोआब सल्तनत काल का सबसे उपजाऊ प्रदेश था। किसानों के विद्रोह के कारण इसने किसानों की मदद के लिए एक नये विभाग दीवान-ए-अमीरकोही की स्थापना की जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही था।

- ☞ अकाल से राहत के लिए सुल्तान ने एक अकाल संहिता तैयार करवाई।
- ☞ किसानों के लिए अग्रिम कृषि ऋण (तकावी) की व्यवस्था करवाई।
- 2. इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा 1329-30 ई. में चलवाया, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग होने लगा।
- ☞ बरनी कहते हैं कि प्रत्येक हिन्दू का घर टकसाल बन गया था।
- 3. इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) को 1327 ई. में स्थानांतरित किया जो असफल रहा।
- ☞ बरनी के अनुसार देवगीरि साम्राज्य के केन्द्र में था जहाँ चारों ओर से दूरी समान थी इसलिए इसे राजधानी के लिए चुना गया था।
- 4. इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लाख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रिम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लिया।
- ☞ इतिहासकारों के अनुसार खुरासान मध्य एशिया का ट्रांस ऑक्सीयाना का क्षेत्र था।
- ☞ यह अभियान तरमाशरीन और मुहम्मद तुगलक की मैत्री का परिणाम था।
- 5. इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए इन्होंने हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचिल अभियान के लिए सैनिक भेजा जहाँ अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।
- ☞ 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री 'इब्नबतुता' 7000 किमी. की यात्रा के बाद दिल्ली पहुंचा।
- ☞ 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
- ☞ 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
- ☞ 1351 ई. सिंध (थट्टा) विद्रोह को दवाने के लिए सुल्तान स्वयं गये थे जिस दौरान उसकी मृत्यु हो गयी थी।
- ☞ उसके मृत्यु पर बदायूँ कहता है कि "सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।"
- ☞ **मुहम्मद बिन तुगलक** होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
- ☞ **मुहम्मद बिन तुगलक** का कहना था कि मेरा राज्य रूग्ण (बीमार) हो चुका है।
- ☞ इसे रक्त पिपाशु या पागल बादशाह भी कहा जाता था।

Note :- मुहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार के सुबेदार मज्दुल मुल्क था।

फिरोज-शाह-तुगलक

- ☞ यह जौना खाँ का चचेरा भाई था।
- ☞ फिरोज शाह तुगलक एक हिन्दु माता, राजपूत रणमल की पुत्री का पुत्र था। अतः इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।

- ☞ इसका राज्याभिषेक 1351 ई. में हुआ।
- ☞ इसने अशोक के टोपरा अभिलेख (हरियाणा) को तथा मेरठ अभिलेख (U.P.) को दिल्ली में स्थापित कर दिया।
- ☞ इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया। जैसे- जौनपुर, फिरोजाबाद, हिसार, फतेहाबाद, फिरोजपुर आदि।
- ☞ जौनपुर को सिराज-ए-हिन्द के रूप में जाना जाता है।
- ☞ इसने 1200 से अधिक फलों के बाग-बगीचे लगवाए ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- ☞ इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- ☞ इसी के समय सर्वप्रथम सिंचाई कर (Tax) लेना प्रारंभ कर दिया गया था। जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे 'हक-ए-शर्ब' (शर्ब) नामक कर (Tax) देना होता था, जो कुल ऊपज का 10% या 1/10 भाग देना होता था।
- ☞ फिरोज-शाह-तुगलक के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- ☞ इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग 'दीवान-ए-बंदगान' बनाया।
- ☞ इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- ☞ गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दीवान-ए-खैरात बनवाया।
- ☞ इसने दर-ऊल-शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- ☞ यह सरकारी खर्च पर हज की यात्रा करवाने वाले पहला भारतीय शासक था।
- ☞ विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- ☞ फिरोज-शाह-तुगलक को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।
- ☞ फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला दुर्ग का निर्माण करवाया।
- ☞ इसी के समय प्रथम बार हिन्दु धर्म ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करना प्रारंभ किया गया था।
- ☞ इसी के द्वारा फुतूहात-ए-फिरोजशाही पुस्तक लिखा गया था।
- ☞ फिरोजशाह तुगलक के दरबार में बरनी नामक विद्वान रहता था। जिसने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख-ए-फिरोजशाही नामक पुस्तक की रचना किया।
- ☞ इनकी मृत्यु 1388 ई. में हो गई।
- ☞ तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहार शरीफ थी।
- **सैन्य अभियान**
- ☞ फिरोजशाह ने 1359 ई. में उड़ीसा के जाजनगर पर चढ़ाई की और जगन्नाथ मंदिर को नष्ट कर काफी धन लूटा।
- ☞ 1365 ई. में उन्होंने काँगड़ा (हिमाचलप्रदेश) में स्थित नागरकोट के दुर्ग पर चढ़ाई की और वहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को नुकसान पहुँचाया।
- ☞ इसमें सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।

नसिरुद्दीन महमूद

- ☞ नसिरुद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- ☞ इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- ☞ इनके पंजाब का सूबेदार खिज़्र खाँ ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर लिया।
- ☞ तैमूर मध्य एशिया का एक खूंखार आक्रमणकारी था। 1369 ई. में अपने पिता के मृत्यु के बाद यह समरकंद का शासक बना था।
- ☞ 1398 ई. में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया।
- ☞ तैमूर लंग के भारत आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्ति था।
- ☞ तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- ☞ तैमूर लंग ने खिज़्र खाँ को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- ☞ तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद था।
- ☞ 1414 ई. में खिज़्र खाँ ने इसकी हत्या कर दी।
- ☞ यह दिल्ली सल्तनत पर सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश था।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

- ☞ सैय्यद वंश के संस्थापक खिज़्र खाँ थे।
- ☞ सैय्यद वंश स्वयं को इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद साहब का वंशज मानते थे।
- ☞ यह सल्तनत काल में शासन करने वाला एकमात्र शिया वंश था।
- ☞ खिज़्र खाँ ने कभी भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि इसने स्वयं को रैय्यत-ए-आला कहा।
- ☞ खिज़्र खाँ की मृत्यु 1421 ई. में हो गई।
- ☞ इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- ☞ 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।

लोदी वंश (1451 ई.-1526 ई.)

- ☞ यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।

बहलोल लोदी (1451 ई.-1489 ई.)

- ☞ तारीख-ए-दाउदी के लेखक अब्दुल्ला के अनुसार बहलोल लोदी अन्य सुल्तानों की तरह सिंहासन पर नहीं बैठता था। यह अपने दरबारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- ☞ इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- ☞ बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।

सिकंदर लोदी (1489 ई.-1517 ई.)

- ☛ अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- ☛ इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की और इसे 1506 ई. में अपनी राजधानी बनायी।
- ☛ आगरा में ही सिकंदर लोदी ने एक किले का निर्माण करवाया जो बादलगढ़ के किले नाम से मशहूर था।
- ☛ इसने गुलरूखी नामक पत्रिका लिखी।
- ☛ इनके आज्ञा से आयुर्वेदिक ग्रंथों का **फरहंग-ए-सिकंदरी** नाम से फारसी अनुवाद करवाया गया था तथा इसके ही शासन काल में गायन संबंधित एक ग्रंथ **लज्जत-ए-सिकंदर शाही** की रचना हुई थी जो भारतीय संगीत पर पहला फारसी ग्रंथ था।

इब्राहिम लोदी (1517 ई.-1526 ई.)

- ☛ इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- ☛ इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान एवं दौलत खान (पंजाब) ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।

- ☛ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- ☛ इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग

नाम	संबंधित विभाग	बनाने वाला सुल्तान
दीवान-ए-मुस्तखराज	वित्त विभाग	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही	कृषि विभाग	मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग	बलबन
दीवान-ए-बंदगान	दास विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-ईशां	पत्र	
काजी	न्याय	
बरीद	गुप्तचर	
दस्तार बन्दान	उलेमा	

□□□

विजयनगर साम्राज्य (Vijaynagar Empire)

☞ तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर दक्षिण भारत में विजय नगर और बहमनी राज्य जबकि उत्तर भारत में मालवा, मेवाड़, जौनपुर, कश्मीर, बंगाल आदि क्षेत्रीय शक्तियों का उदभव हुआ।

➤ विजयनगर साम्राज्य

- ☞ विजयनगर का शब्दिक अर्थ होता है— जीत का शहर।
- ☞ विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने किया। इन दोनों को मुहम्मद बिन तुगलक ने इस्लाम धर्म कबूल करवाया था और दक्षिण भारत भेज दिया। जहाँ इनकी मुलाकात श्रृंगेरी के प्रतिष्ठित गुरु विद्यारण्य से हुई। जिन्होंने इनकी शुद्धि करायी अर्थात् वापस हिन्दू धर्म में लाया।
- ☞ इन्होंने दक्षिण भारत के क्षेत्र को जीतकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किया और अपने पिता संगम के नाम पर संगम वंश की स्थापना किया और हम्पी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।

Note :- विजयनगर साम्राज्य पर 4 वंशों ने शासन किया।

Trick :- संगम सतुआ

संगम वंश → सालुव वंश → तुलुव वंश → आरविडु वंश

संगम वंश (1336 ई.-1485 ई.)

- ☞ संगम वंश के प्रमुख शासक के क्रम—
हरिहर प्रथम → बुक्का प्रथम → हरिहर द्वितीय → देवराय प्रथम → देवराय द्वितीय → प्रौढ़ राय
- **हरिहर प्रथम (1336 ई.-1356 ई.)**
- ☞ इस वंश का प्रथम शासक हरिहर-I था। जो 1336 ई. में शासक बना।
- ☞ इसके दरबार में सायण नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने वेदों पर टीका (Command) लिखा।
- **बुक्का प्रथम (1356 ई.-1377 ई.)**
- ☞ हरिहर प्रथम के बाद इसका छोटा भाई बुक्का प्रथम शासक बना। इसने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण किया। इसके समय कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के बीच के रायचूर दोआब पर अधिकार के लिए बहमनी साम्राज्य से युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध 200 वर्षों तक चला और अन्ततः सफलता विजयनगर साम्राज्य को ही मिला।
- ☞ इसके शासन काल में बहमनी शासक मुहम्मद-I ने बुक्का-I को पराजित किया।

➤ देव राय प्रथम (1406 ई.-1422 ई.)

- ☞ इसने अपने सेना में तुर्क धनुर्धर को शामिल किया। इसने तुंगभद्रा नदी पर नहर बनाया ताकि सिंचाई हो सके। इसके समय बहमनी शासक फिरोजशाह बहमन ने आक्रमण किया। इसने देवराय-I को पराजित कर दिया। किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया।

➤ देव राय द्वितीय (1422 ई.-1446 ई.)

- ☞ इसके समय में संगम वंश का सर्वाधिक विकास हुआ। यह संगम वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- ☞ इसने श्रीलंका अभियान किया। इस प्रकार श्रीलंका अभियान करने वाला देवराय-II तीसरा शासक बन गया। पहला राजाराज, नव्वक का राजा।
- ☞ वह अपनी सिंहासन के बगल में कुरान रखता था।
- ☞ देवराय-II को हाथी मारने का शौक था अतः इसे गजवेटका कहा गया।
- ☞ इसी के दरबार में फारस के विदेश यात्री अब्दुर रज्जाक आया था। जिसका यात्रा विवरण मतला-ए-साहेन है। जो फारसी भाषा में लिखा गया। इस पुस्तक से विजयनगर का प्रशासनिक जानकारी मिलती है। इसी में लिखा है कि विजयनगर साम्राज्य में 300 बन्दरगाह थे।

➤ विरूपाक्ष द्वितीय (1465 ई.-1485 ई.)

- ☞ संगम वंश का अंतिम शासक विरूपाक्ष-II था जिसकी हत्या सालुव नरसिंह ने कर दिया और संगम वंश के स्थान पर सालुव वंश की स्थापना कर दिया।
- ☞ इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में प्रथम बलापहार की घटना कहा गया है।

सालुव वंश (1485 ई.-1505 ई.)

- ☞ इस वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था। इस वंश का अंतिम शासक इम्माडि नरसिंह था जिसकी हत्या वीर नरसिंह ने कर दिया और सालुव वंश के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना कर दिया।
- ☞ इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलाहार की घटना कहते हैं।

तुलुव वंश (1505 ई.-1570 ई.)

- ☞ इसके संस्थापक वीर नरसिंह थे। जिसका पुर्तगाली गवर्नर अल्मोडा से अच्छा सम्बन्ध था। इसने 1505 ई. में अल्मोडा के साथ घोड़े के लिए व्यापारिक संधि किया था।

- वीर नरसिंह को इतिहास में द्वितीय बलापहार के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी स्थापना भी शक्ति के बल पर की गई थी।
- 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गयी और अगला शासक कृष्णदेव राय बना [KDR]

➤ कृष्णदेव राय (1509 ई.-1529 ई)

- यह तुलुव वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने रायचूर दोआब पर अधिकार कर लिया।
- इस उपलक्ष्य में उसने **आन्ध्र भोज**, **आन्ध्र पितामह** तथा **अभिनव भोज** की उपाधि धारण किया। इसने यमन राजा से स्थापनाचार्य की भी उपाधि धारण किया।
- यह एक विद्वान शासक था, जिसने **आमुक्त माल्याद** नामक पुस्तक की रचना किया। यह पुस्तक तेलुगू भाषा में था। इसकी तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जाती है।
- इसने संस्कृत भाषा में **जामवति कल्याणम्** नामक पुस्तक का रचना किया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा (तुजूक-ए-बाबरी) में लिखा है कि दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली शासक उस समय कृष्णदेव राय थे।
- कृष्णदेव राय ने विजयनगर के निकट **नागलपुर** शहर की स्थापना किया और वहां **बिट्ठल स्वामी मन्दिर** तथा **हजारा मन्दिर** का निर्माण किया।
- इसके दरबार में तेलगु भाषा के 8 प्रमुख विद्वान रहते थे जिन्हें संयुक्त रूप से **अष्टदिग्गज** कहते थे। इस अष्टदिग्गज में सबसे प्रमुख कवि अल्लासानी पेडन्ना थे जिन्हें तेलुगू भाषा का पितामह कहा जाता है। इन्होंने हरिकथा तथा मनुकारिता नामक पुस्तक की रचना किया। इनके शासनकाल को तेलुगू साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- अष्टदिग्गज में दूसरे स्थान पर तेनालीराम थे जिनकी रचना पाण्डुरंग महामात्य है। यह मंत्री के पद पर भी थे और इन्होंने अन्धविश्वास से जनता को दूर किया।
- इनके दरबार में **लक्ष्मीधर** नामक संगीतकार रहता था। जिन्होंने संगीत सूर्योदय नामक ग्रंथ लिखा।
- मात्र 10 वर्षों में ही कृष्णदेव राय ने अपने सभी विरोधियों को पराजित कर दक्षिण भारत में स्वयं एवं विजयनगर की प्रभुत्व स्थापित किया।
- 1529 ई. में कृष्णदेव राय की मृत्यु हो गयी
- **अच्युतदेव राय (1529 ई.-1542 ई.)**
- इस वंश का अगला शासक **अच्युतदेव राय** बना।
- इसने प्रान्तों पर नियन्त्रण रखने के लिए **महामण्डलेश्वर** नामक नये अधिकारी के नियुक्ति की गई। इसके समय से ही इस वंश का बिखराव शुरू हो गया।



- इसके समय पुर्तगाली यात्री **नुनीज** भारत आया।
- **सदाशिव राव (1542 ई.-1570 ई.)**
- इस वंश का **अंतिम शासक सदाशिव राव** था। इसका सेनापति रामराय था। रामराय ने शासन की सारी शक्ति अपने हाथ में ले लिया।
- वह एक साम्राज्यवादी सेनापति था जिसने बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य (बीजापुर, गोलकुण्डा, वरार, वीदर, अहमदनगर) में फूट डालने की कोशिश किया किन्तु इसके विपरीत परिणाम हुआ।
- इसी के शासन काल में बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य में से वरार को छोड़कर शेष चारों ने मिलकर 1565 में विजयनगर पर हमला कर दिया। इस युद्ध को तालिकोटा का युद्ध कहा जाता है। इसे राक्षसी-तंगड़ी का युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।
- इस युद्ध ने विजयनगर साम्राज्य का अन्त कर दिया। युद्ध के मैदान में रामराय मारा गया।
- सदाशिवराय ने अपना अगला सेनापति तिरुमल को बनाया। तिरुमल ने सदाशिवराय की हत्या कर दी और एक नया वंश आरविडू वंश की स्थापना की।

आरविडू वंश (1570 ई.-1652 ई.)

- इस वंश के संस्थापक तिरुमल थे। तिरुमल ने पेणुगोण्डा को विजयनगर के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया परंतु 1586 ई. में वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपना मुख्यालय बनाया।
- इसे विजयनगर साम्राज्य का अंतिम महान शासक माना जाता है।
- यह वंश अधिक दिन तक शासन नहीं कर सका और इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग-III को पराजित करके शिवाजी ने उसके क्षेत्र को मराठा साम्राज्य में मिला लिया।
- विजयनगर साम्राज्य को तेलगु भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।

विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था

- कृष्णदेव राय ने **नायकर व्यवस्था** लाया। इसके तहत अधिकारियों को नगद वेतन के स्थान पर भूमि दिया जाता था। यह गुप्तकालीन सामन्ती व्यवस्था तथा दिल्ली सल्तनत के इक्ता व्यवस्था के समान था।
- इस समय सैनिकों को दान में दी गयी भूमि को **अमरम् भूमि** कहा जाता था तथा इस भूमि को प्राप्त करने वाले को **अमरम् नायक** कहा जाता था। मन्दिर के दान में दी गयी भूमि को **देवभूमि** कहा जाता था।
- इस समय सैन्य विभाग को कदाचार कहा जाता था।

मुद्रा व्यवस्था

- विजयनगर की सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का वराह था। जो 52 ग्रेन का होता था। इसे ही पैगोड़ा कहा जाता था।

विजयनगर की स्थापत्य कला

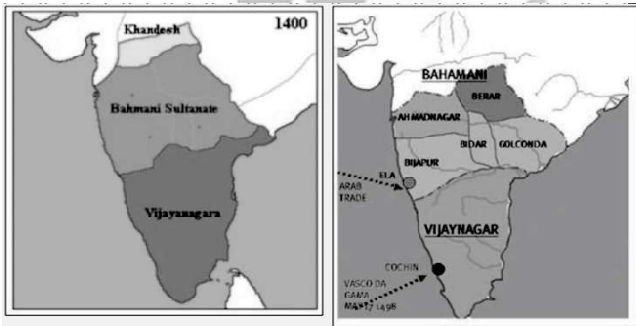
- इस समय मन्दिर निर्माण के क्षेत्र में द्रविड़ शैली का विकास अधिक हुआ। जिसका सर्वश्रेष्ठ नमूना **विठ्ठलस्वामी मंदिर** है।

विजयनगर काल में आये विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डे काण्टी	इटली	देवराय I
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय II
बार्थोमा	इटली	वीर नरसिंह
बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
डोमिंगोपाएस	इटली	कृष्णदेव राय
नुनिज	पुर्तगाली	अच्युतदेव राय

Note :- चीनी यात्री माहुआन संगम वंश के शासक मल्लिकार्जुन के शासन काल में आया था।

बहमनी साम्राज्य (1347 ई.-1527 ई.)



- **अलाउद्दीन हसन बहमनशाह (1347 ई.-1358 ई.)**
- इस वंश की स्थापना 1347 ई. में मोहम्मद बिन तुगलक के समय हसन गंगु (जफर खाँ) ने किया। इसका मूल नाम अलाउद्दीन हसन बहमनशाह था।
- हसन गंगू ने अपनी राजधानी गुलबर्गा को बनाया तथा इसका नाम अहसानाबाद रखा।
- बहमनी राज्य की भाषा मराठी थी तथा इनकी मुद्रा हूण थी।
- **मुहम्मद शाह (1358 ई.-1375 ई.)**
- हसन गंगू के बाद मुहम्मद शाह / प्रथम शासक बना।

- इसी के शासन काल में बहमनी-विजयनगर की बीच संघर्ष की शुरुआत हुई।
- इसने रायचूर पर अधिकार के लिए बुक्का-I से युद्ध किया और युद्ध में विजय रहा।
- **ताजुद्दीन फिरोजशाह (1397 ई.-1422 ई.)**
- यह बहमनी वंश का सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- इसने भी रायचूर पर अधिकार कर लिया। विजयनगर शासक देवराय-I से युद्ध किया और युद्ध में विजयी रहा।
- **शिहाबुद्दीन अहमदशाह प्रथम (1422 ई.-1436 ई.)**
- इस वंश का अगला शासक शिहाबुद्दीन था।
- उदार नीति के कारण लोग इसे संत अहमद या अहमद शाह बली कहते थे।
- **हुमायूँशाह (1458 ई.-1461 ई.)**
- यह एक क्रूर शासक था। अतः इसे जालिम हुमायूँ तथा **दक्कन का नीरो** भी कहा जाता था।
- इसी ने महमुद गवाँ को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया था। जो एक योग्य व्यक्ति थे। ये पत्रों का संग्रह करते थे। इनके पत्रों का संग्रह रियाजूल-इन्शा कहलाता है।
- इस वंश का अंतिम शासक कलिमुल्ला था। जिसकी मृत्यु 1527 में होने के बाद बहमनी साम्राज्य का अंत हो गया।



- इसी के समय बहमनी साम्राज्य पांच भागों में बंट गया-
 - (1) बरार,
 - (2) बीजापुर,
 - (3) अहमदनगर,
 - (4) गोलकुण्डा तथा
 - (5) बीदर

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष	क्षेत्र	राजधानी
1. बरार	इमादशाही वंश	फतेहउल्लाह ईमादशाह	1484	महाराष्ट्र	एलिचपुर, गावीलगाव
2. बीजापुर	आदिल शाही वंश	यूसूफ आदिल शाह	1489	कर्नाटक	नौरसपुर
3. अहमदनगर	निजाम शाही वंश	मलिक अहमद	1490	महाराष्ट्र	जुन्नार, अहमदनगर
4. गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	1512	तेलंगाना	गोलकुण्डा
5. बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर अली बरीद	1526	कर्नाटक	बीदर

04.

भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement)

भक्ति आन्दोलन 600-800 AD

पूर्व मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन, दक्षिण भारत में वर्ण व्यवस्था तथा छूआछूत के कारण अत्यधिक फैल गयी। यहां से भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। भक्ति आन्दोलन की शुरुआत सर्वप्रथम नयनार सन्तों ने किया। इस आन्दोलन की शुरुआत करने का श्रेय अलवार सन्तों को भी जाता है।



नयनार, शैव धर्म के अनुयायी थे वहीं अलवार, वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। भक्ति आन्दोलन का एक सुदृढ़-स्वरूप देने का श्रेय शंकराचार्य को जाता है।

शंकराचार्य

शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म केरल के कलाडी में 788 ई. में हुआ था। इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद् था। शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का मत दिया और कहा कि यह संसार झूठा है। ब्रह्म सत्य है। इन्होंने स्मृति-सम्प्रदाय की स्थापना किया। शंकराचार्य ने दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को बौद्ध तथा जैन धर्म के प्रभाव को कम करने के लिए किया। 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित केदारनाथ में मात्र 32 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई। इन्होंने अपने विचार के प्रसार के लिए भारत के चारों दिशा में पीठ (मठ) का निर्माण कराया।



- उत्तर → ज्योतिष पीठ (बद्रीनाथ) उत्तराखण्ड
- दक्षिण → श्रृंगेरी पीठ (मैसूर) कर्नाटक
- पूर्व → गोवर्धन पीठ (पूरी) ओडिशा
- पश्चिम → शारदापीठ (द्वारका) गुजरात

ज्योतिष मठ (बद्रीनाथ, उत्तराखण्ड)

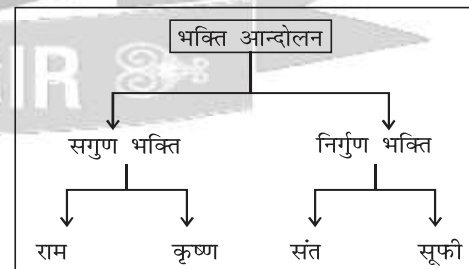
शारदा मठ (द्वारका, गुजरात)			गोवर्धन मठ (पूरी, उड़ीसा)

श्रृंगेरी मठ (मैसूर, कर्नाटक)

Note :- 12वीं सदी में शंकराचार्य के मत को कई विद्वान ने काट दिया।

- माधवाचार्य ने द्वैतवाद का मत दिया और ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना किया।
- निम्बाकाचार्य ने द्वैता द्वैतवाद का मत दिया और सनक सम्प्रदाय की स्थापना किया।
- बल्लभाचार्य ने शुद्धद्वैतवाद का मत दिया और पुष्टि सम्प्रदाय की स्थापना किया।
- रामानुजाचार्य ने विशिष्टता द्वैतवाद का मत दिया और श्री गणेश की स्थापना किया।

प्रारम्भ में भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत तक सीमित था। भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत में लाने का श्रेय रामानंद को जाता है। रामानन्द ने अपना उपदेश हिन्दी में देना प्रारम्भ किया। 16वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन उच्च-नीच तथा छूआ-छूत के विरुद्ध था। उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन दो भागों में बंट गया।



सगुण भक्ति

इस भक्ति के भक्त भगवान को एक विशेष रूप देते हैं। वे भगवान की मूर्ति या चित्र बनाते हैं और उसकी पूजा करते हैं। सगुण भक्ति दो भागों में बटा-रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति। यह अवतारवाद को मानते थे।

राम-भक्ति

- इस शाखा के भक्त-भगवान राम की अराधना करते थे। इस शाखा के सबसे प्रमुख भक्त तुलसीदास थे। जिन्होंने अवधी भाषा में रामचरितमानस की स्थापना की। उनकी अन्य प्रमुख रचना कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका है। ये अकबर के समकालीन थे।
- अकबर ने इन्हें नवरत्न में शामिल होने का प्रस्ताव दिया। लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- दक्षिण भारत में रामभक्ति को फैलाने का कार्य त्यागराज ने किया।

कृष्ण-भक्ति

- इस शाखा के सारे भक्त भगवान कृष्ण की अराधना करते थे। कृष्ण भक्ति में सबसे प्रमुख संत विट्ठल-स्वामी थे। इन्होंने आठ शिष्यों को शिक्षा दिया। जिन्हें संयुक्त रूप से अष्टाछाप कहा जाता है। इस अष्टाछाप में सबसे प्रमुख शिष्य सूरदास थे।
- सूरदास की रचना सूर-सागर प्रमुख है।
- महाराष्ट्र के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति को एक साथ तुकाराम इत्यादि ने फैलाया।
- तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे। गुजरात के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति का प्रचार नरसिंह मेहता ने किया। इनकी कविता "वैष्णव जन तो तेने कहिए" है। यह महात्मा गांधी का भी पसंदीदा गीत था।
- बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के क्षेत्र भक्ति आन्दोलन का प्रचार चैतन्य महाप्रभू ने किया था। इन्होंने ही हरिकीर्तन प्रारम्भ किया।
- कृष्ण भक्ति में संगीत बहुत ज्यादा है।

मीराबाई

- मीराबाई सोलहवीं शताब्दी के भारत की एक महान महिला संत थी। वे मेड़ता के राजा रत्नसिंह राठौर की इकलौती पुत्री थी।
- मीराबाई का विवाह राणासांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ परंतु वह जल्द ही विधवा हो गई थी।
- वह सगुण भक्ति धारा के कृष्ण की भक्त थीं।

सूरदास

- सूरदास एक महान कवि थे जो कृष्ण की प्रशंसा के लिए जाने जाते थे।
- यह मुगल शासक अकबर के समकालीन थे।

निर्गुण भक्ति

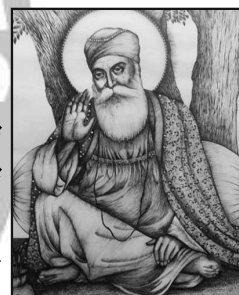
- इस भक्ति के सन्त किसी की मूर्ति या चित्र नहीं बनाते थे। वे बिना मूर्ति के ही अराधना करते थे। इनका मानना था कि ईश्वर कण-कण में विद्यमान हैं।
- निर्गुण भक्ति दो भागों में बंट गया। संत भक्ति तथा सूफी भक्ति।

संत भक्ति

- संत भक्ति के अंतर्गत रामानंद, कबीर, रैदास, गुरुनानक आदि जैसे संत आते हैं—
- **रामानंद**
 - इसका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। ये रामानुज के शिष्य थे।
 - इसने पहली बार उपदेशों के हिन्दी में देना प्रारंभ किया।
 - ये राम और सीता के उपासक थे।
 - इनके 12 प्रमुख शिष्य थे, जो अलग-अलग जाति से थे जिनमें से दो महिला शिष्या भी थी— पद्मावती और सुरसी।
- **कुछ प्रमुख शिष्य एवं उनकी जातियाँ—**
 - कबीरदास— जुलाहा
 - रैदास — चमार (संतों का संत)
 - धन्ना — जाट
 - पीपा — राजपूत
 - सेन — नाई
 - ददू — जुलाहा

सिख धर्म

- **गुरुनानक देव**
- यह सिख धर्म के प्रथम गुरु गुरु थे।
- यह संत भक्ति के संत थे।
- इनका जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. में तलवंडी में एक खत्री परिवार में हुआ था।
- यह स्थान वर्तमान समय में पाकिस्तान में है, जो ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।
- गुरु नानक ने सिख धर्म की स्थापना किया और गरीबों को मुफ्त में भोजन (लंगर) व्यवस्था शुरू किया किन्तु यह सुचारू रूप से नहीं चल पाया था।
- अंतिम समय उन्होंने करतार साहिब में बिताये थे। इन्होंने ही गुरु की परंपरा को प्रारम्भ किया था।
- इनके कविताओं एवं गीतों का संकलन एक पुस्तक के रूप में किया गया जो आदि ग्रंथ के नाम से प्रकाशित हुआ।
- इनकी मृत्यु 1539 ई. में करतारपुर (पाकिस्तान में) हो गई।
- यह **बाबर** के साथ-साथ सल्तनत काल के अंतिम शासक **इब्राहिम लोदी** और महान संत **चैतन्य महाप्रभु** एवं **कबीरदास** के समकालीन थे।
- **अंगद देव**
- ये दूसरे गुरु थे।
- इनके बचपन का नाम लहना सिंह था।
- इन्होंने गुरुनानक देव की जीवनी को लिखा था।



- ☞ इन्होंने लंगर व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाया।
- ☞ इन्होंने गुरु-मुखी लिपि का खोज किया।
- **अमरदास**
- ☞ ये तीसरे गुरु थे।
- ☞ इन्होंने पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा (कुप्रथा) इत्यादि का विरोध किया।
- ☞ इन्होंने हिन्दू विवाह पद्धति से अलग हटकर सिखों के लिए एक नई विवाह पद्धति को लागू किया जिसे लवन पद्धति कहा गया।
- **रामदास**
- ☞ ये चौथे गुरु थे।
- ☞ इनके समय से गुरु का पद वंशानुगत हो गया।
- ☞ इनका अकबर से अच्छा सम्बन्ध था। अकबर ने इन्हें अमृतसर शहर के लिए 500 बिगहा जमीन दान में दिया।
- ☞ इन्होंने अमृतसर नामक एक तालाब बनाया था।
- ☞ अमृतसर Airport का नाम गुरु रामदास International Airport है।
- ☞ यह अकबर के समकालीन थे।
- **अर्जुन देव**
- ☞ ये पांचवें गुरु थे।
- ☞ इन्होंने ही स्वर्ण मन्दिर की स्थापना की।
- ☞ इन्होंने गुरुग्रन्थ साहिब की रचना की थी। इन्हें आदि ग्रन्थ भी कहते हैं।
- ☞ गुरु अर्जुन देव ने मसनद प्रथा को प्रारंभ किया था जिसके अंतर्गत सिख लोग अपनी आय का 10 प्रतिशत गुरु के पास जमा करते थे।
- ☞ इन्होंने जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को समर्थन दिया था। जिस कारण जहांगीर ने इन्हें फांसी दे दिया।

Note :- राजा रंजीत सिंह ने हरमंदिर पर सोने की परत चढ़वाया जिसके बाद हरमंदिर स्वर्ण मंदिर कहलाने लगा।

- **गुरु हरगोविन्द**
- ☞ ये छठवें गुरु थे।
- ☞ इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना किया तथा नगाड़ा बजाने की परम्परा शुरू किया।
- ☞ इन्होंने स्वयं को सच्चा बादशाह घोषित किया और अमृतसर की घेराबंदी कराकर स्वयं को शासक के रूप में घोषित कर दिया।
- **गुरु हरराय**
- ☞ ये सातवें गुरु थे।
- ☞ इनका मुगल बादशाह दारा शिकोह से अच्छा सम्बन्ध था।
- **गुरु हरकिशन**
- ☞ ये आठवें गुरु थे।
- ☞ इनका कार्यकाल बहुत छोटा था।
- ☞ इनकी मृत्यु चेचक के कारण हो गयी थी।

- **गुरु तेगबहादुर**
- ☞ ये नौवें गुरु थे।
- ☞ इन्होंने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को शरण दे दिया। जिस कारण औरंगजेब ने इन्हें इस्लाम धर्म कुबुल करने को कहा किन्तु इन्होंने इस्लाम धर्म कुबुल नहीं किया। जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर हत्या कर दिया जहाँ आज शिशगंज गुरुद्वारा है।
- **गुरु गोविन्द सिंह**
- ☞ ये दसवें तथा अंतिम गुरु थे।
- ☞ इनका जन्म 26 दिसम्बर, 1666 को पटना साहिब में हुआ था। किन्तु इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अमृतसर में हुई थी।
- ☞ इनकी पिता का नाम गुरु तेगबहादुर तथा माता का नाम गुजरी देवी थी।
- ☞ इनके बाद गुरु का पद समाप्त हो गया।
- ☞ इन्होंने सिखों को एक सैनिक टुकड़ी में ढाल दिया और 13 अप्रैल 1699 ई. में वैशाखी के दिन आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना किया।
- ☞ इन्होंने 5 ककार की स्थापना किया जो इस प्रकार है— केश, कंधा, कृपाण, कछा, कड़ा रखना अनिवार्य कर दिया।
- ☞ इन्होंने कहा कि सिख अपनी बाल कभी नहीं दिखायेगा। इन्होंने मुगलों का मुँहतोड़ जवाब दिया।
- ☞ इनका कहना था—



**“चिड़िया नु मै बाज लड़ावा
गिदर नु मै शेर बनाव
सवालख नु एक लड़ावा
तब गोविन्द सिंह नाम कहावा”**

- ☞ 1705 में औरंगजेब के कहने पर बुलखान नामक व्यक्ति ने महाराष्ट्र के नानदेड़ में गोविन्द सिंह की हत्या कर दी। गोविन्द सिंह के मृत्यु के बाद सबसे बड़ा सिख योद्धा बंदा बहादुर था। जिसने हजारों की संख्या में मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
- ☞ औरंगजेब के इशारे पर बंदा बहादुर की भी हत्या कर दी गई। इसके बाद सिख धर्म छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। जिसे मिशल कहते हैं। सबसे प्रमुख मिशल सुकर चकिया मिशल था। जिससे राजा रंजीत सिंह आते थे। इन्होंने ही स्वर्ण मंदिर के दीवारों पर सोने की चादर चढ़वाई थी।

सूफी भक्ति

- ☞ सूफी शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के सफा शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है पवित्रता।

- ☛ पहले सूफी सन्त के रूप में मैसूर हल्लाज का नाम आता है। इन्होंने अनहलत की उपाधि धारण की जिसका अर्थ होता है ईश्वर से मिलने वाला।
- ☛ सूफी विचारधारा में गुरु (पीर) और शिष्य (मुरीद) के बीच संबंध का महत्व बहुत अधिक है। प्रत्येक पीर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करता था जिसे **वली** कहते थे।

चिश्ती सम्प्रदाय

- ☛ भारत में सबसे प्रमुख सम्प्रदाय चिश्ती सम्प्रदाय थी। भारत में इसकी स्थापना का श्रेय ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र राजस्थान के अजमेर में बनाया।
- ☛ चिश्ती सम्प्रदाय के संत उदारवादी (विनम्र) होते थे। ये कट्टर नहीं होते।
- ☛ मोइनुद्दीन चिश्ती के गुरु उस्मान हासनी थे।
- ☛ मोइनुद्दीन चिश्ती के सबसे प्रिय शिष्य ख्वाजा बख्तियार काकी थे।
- ☛ बख्तियार काकी के शिष्य बाबा फरीद तथा कुतुबुद्दीन ऐबक थे।
- ☛ बाबा फरीद के उपदेशों को गुरु ग्रन्थ साहिब में भी रखा गया है।
- ☛ बाबा फरीद के सबसे प्रिय शिष्य निजामुद्दीन औलिया थे, ये सात सुल्तानों का काल देखे थे।
- ☛ बाबा फरीद दिल्ली सल्तनत के सुल्तान बलबन के दामाद थे फिर भी उन्होंने राजकीय संरक्षण को स्वीकार नहीं किया।
- ☛ निजामुद्दीन औलिया के सबसे प्रिय शिष्य अमीर खुसरो थे।
- ☛ निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो दोनों का मकबरा दिल्ली में एक ही जगह है।
- ☛ अकबर के समकालीन सूफी शेख सलीम चिश्ती थे। इन्हीं से प्रभावित होकर अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा था। जो आगे जाकर जहांगीर के नाम से जाना गया।
- ☛ दक्षिण भारत में चिश्ती संप्रदाय का प्रचार करने का श्रेय सैयद मुहम्मद गेसूदराज को ही प्राप्त है।

Note :- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा चलाए गए सम्प्रदायों को चिश्ती सम्प्रदाय कहते हैं। यह भारत का सबसे बड़ा सूफी संप्रदाय है।

सुहरावर्दी सम्प्रदाय

- ☛ इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय बहाउद्दीन जकारिया को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र पाकिस्तान के मुल्तान को बनाया था। इस शाखा के सूफी कठोर व्रत का पालन नहीं करते हैं। बल्कि सामान्य जीवन को जीते थे।

फिरदौसी सम्प्रदाय

- ☛ इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय याहिया मनेरी को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र बिहार के मनेर शरीफ (दानापुर) को बनाया।
- ☛ बिहार में सबसे प्रचलित फिरदौसी सम्प्रदाय थी।

नक्शबंदी सम्प्रदाय

- ☛ नक्शबंदी सम्प्रदाय के संस्थापक ख्वाजा बाकी विल्लाह थे।
- ☛ इस सम्प्रदाय के सूफी कठोर व्रत का पालन करते थे तथा कट्टर थे।
- ☛ धार्मिक कट्टर का अर्थ होता है धार्मिक नियम को कठोरता पूर्ण लागू करवाने वाला।
- ☛ मुगल बादशाह औरंगजेब इसी सम्प्रदाय का अनुयायी था। यह एक प्रत्यक्षवादी दर्शन, (वजहत-उल-शुद) था।

कादिरि सम्प्रदाय

- ☛ इस सम्प्रदाय के संस्थापक बगदाद के अब्दुल कादिर जिलानी थे परंतु भारत में इस सिलसिले के शुरूआत सैयद मोहम्मद जिलानी ने की थी।
- ☛ मुगल बादशाह शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह, कादिरि संप्रदाय का ही अनुयायी था।

Note :- पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के जनक अब्बुल कादिर को कहा जाता है, जो सूफी न होकर एक परमाणु वैज्ञानिक थे।

मुगल काल (Mughal Period)

- ☛ तैमूर के मृत्यु के बाद मध्य एशिया में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। उन्हीं राज्यवंशों में से एक मुगल था।
बाबर → हुमायूँ → अकबर → जहांगीर → शाहजहाँ
→ औरंगजेब → बहादुर शाह जफर

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर (1526-1530 ई.)

- ☛ मुगल वंश का संस्थापक बाबर को माना जाता है। बाबर का वास्तविक नाम 'जहीरुद्दीन मुहम्मद' था। तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ बाघ होता है। अतः जहीरुद्दीन मोहम्मद अपने पराक्रम एवं निर्भक्ता के कारण बाबर कहलाया।
- ☛ बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ जो अब उजबेकिस्तान में है। इसके पिता उमर शेख मिर्जा (तैमूर वंशज) तथा माता कुतुलुबनिगार खान (मंगोल वंशज) जो चंगेज खां की वंशज थी। इसलिए इसे तुर्कों एवं मंगोलो दोनों के रक्त का मिश्रण के वंशज कहा गया।
- ☛ 1519 ई. में बाबर ने पहला बाजौर अभियान किया था। उसी आक्रमण में ही उसने भेड़ा के किला को जीत लिया। बाबर ने इस किले को जीतने के लिए सर्वप्रथम बारूद और तोप का प्रयोग किया।
- ☛ बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध से पहले भारत पर 4 बार आक्रमण किया।
- ☛ पानीपत का प्रथम युद्ध उसका भारत पर 5वां आक्रमण था।
- ☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के लिए बाबर को निमंत्रण पंजाब का सूवेदार दौलत खां लोदी, इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां लोदी तथा राणासांगा ने दिया था।
- ☛ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने उजबेकों की युद्ध नीति तुगलमा नीति (अर्धचन्द्राकार) तथा तोपो को सजाने में उस्मानी विधि (रूमी विधि) का प्रयोग किया और इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया और इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया।
- ☛ दिल्ली सल्तनत का एक मात्र शासक इब्राहिम लोदी था जो युद्ध में मारा गया था।
- ☛ भारत में तोप (कैनन) का प्रयोग पहली बार बाबर ने ही किया था।
- ☛ तुगलमा नीति को अर्धचन्द्राकार नीति भी कहते हैं। इस नीति के सफलता का मुख्य स्रोत तोपो की उपस्थिति थी।



Trick :- बाबर के द्वारा जीता गया युद्ध।

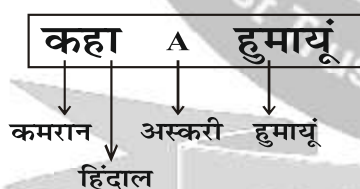
पान	खा	चांद	के घर
1526	1527	1528	1529
पानीपत	खानवा	चन्देरी	घाघड़ा
(इब्राहिम लोदी)	(राणासांगा)	(मेदनी राय)	(अफगान सेना)

- ☛ बाबर का पसंदीदा शहर काबुल था।
- ☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के विजय के बाद बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक-एक चांदी का सिक्का दिया और कलन्दर (दानी) की उपाधि धारण किया।
- ☛ पानीपत का प्रथम युद्ध में बाबर ने यह निर्णय नहीं किया था कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।
- ☛ जैसे ही बाबर ने भारत में रहने का योजना बनाया तो राणासांगा ने विरोध कर दिया। 1527 ई. में खानवा (आगरा के समीप) का युद्ध हो गया। इस युद्ध में राणासांगा के साथ इब्राहिम लोदी के भाई महमूद लोदी, आलम लोदी और चंदेरी के राजा मेदनी राय थे। सबकी सेना आगरा आयी और उसके बाद संयुक्त सेना खानवा के मैदान में आ गयी। बाबर का मुकबला इन चारों से था। इनकी संयुक्त सेना का मुकबला बाबर के बस की नहीं थी। बाबर ने अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और सैनिकों पर लगने वाले तमगा नामक टैक्स को खत्म कर दिया। बाबर को हर हाल में यह युद्ध जीतना था।
- ☛ इसी युद्ध में बाबर ने जिहाद शब्द (धर्म के लिए जनादेश) का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर अपने सैनिकों को मदिरा पीने से रोक लगा दिया। बाबर की सेना पूरी बहादुरी से लड़ी और इस युद्ध में बाबर की जीत हुई। इस युद्ध के बाद बाबर ने गाजी (युद्ध का विजेता) की उपाधि धारण कर लिया।
- ☛ इसी युद्ध के बाद बाबर ने यह निर्णय लिया कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।
- ☛ 1528 के चंदेरी (मध्यप्रदेश का ग्वालियर क्षेत्र) के युद्ध में उसने मेदनी राय को पराजित किया।
- ☛ 1529 ई. में उसने घाघरा के युद्ध में बिहार तथा अफगान के संयुक्त सेना को पराजित कर दिया। इसका नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। किन्तु बाबर ने अफगानों का पूर्णतः सफाया नहीं किया। यही बचे हुए अफगान सैनिक हुमायूँ के लिए खतरा बनकर सामने आए।
- ☛ 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी और उसे आगरा के आरामबाग में दफनाया गया।

- अकबर के समय इसके कब्र को आगरा से काबूल स्थानान्तरित कर दिया गया, क्योंकि बाबर की यह इच्छा थी उसे काबूल में दफनाया जाए।
- बाबर चार बाग शैली आगरा के आरामबाग नामक बगीचा में बनवाया था। इसमें नदी तथा नहरों द्वारा पानी देने की व्यवस्था थी।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक कहा जाता है।



- बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा) में यह कहता है कि उसने जिस वक्त भारत पर आक्रमण किया उस वक्त भारत में 5 मुस्लिम राज्य तथा 2 हिन्दू राज्य थे मुस्लिम राज्य में-दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी तथा बंगाल था। हिन्दू राज्य में-मेवाड़ तथा विजयनगर था।
- विजयनगर शासक कृष्ण देवराय बाबर के समकालिन थे बाबर ने इन्हें उस वक्त का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है।
Remark :- तुजुक-ए-बाबरी बाबर की आत्मकथा है, जो तुर्की भाषा में है। अब्दुल रहीम खाने खाना ने अकबर के कहने पर इसका फारसी में अनुवाद किया। इसकी फारसी अनुवाद ही बाबर-नामा कहलाता है।
- बाबर के 4 पुत्र थे। जिसमें सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ था। बाबर अपने जीवन काल में ही चिश्ती को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।



नसीरुद्दीन मोहम्मद हुमायूँ (1530-1556 ई.)

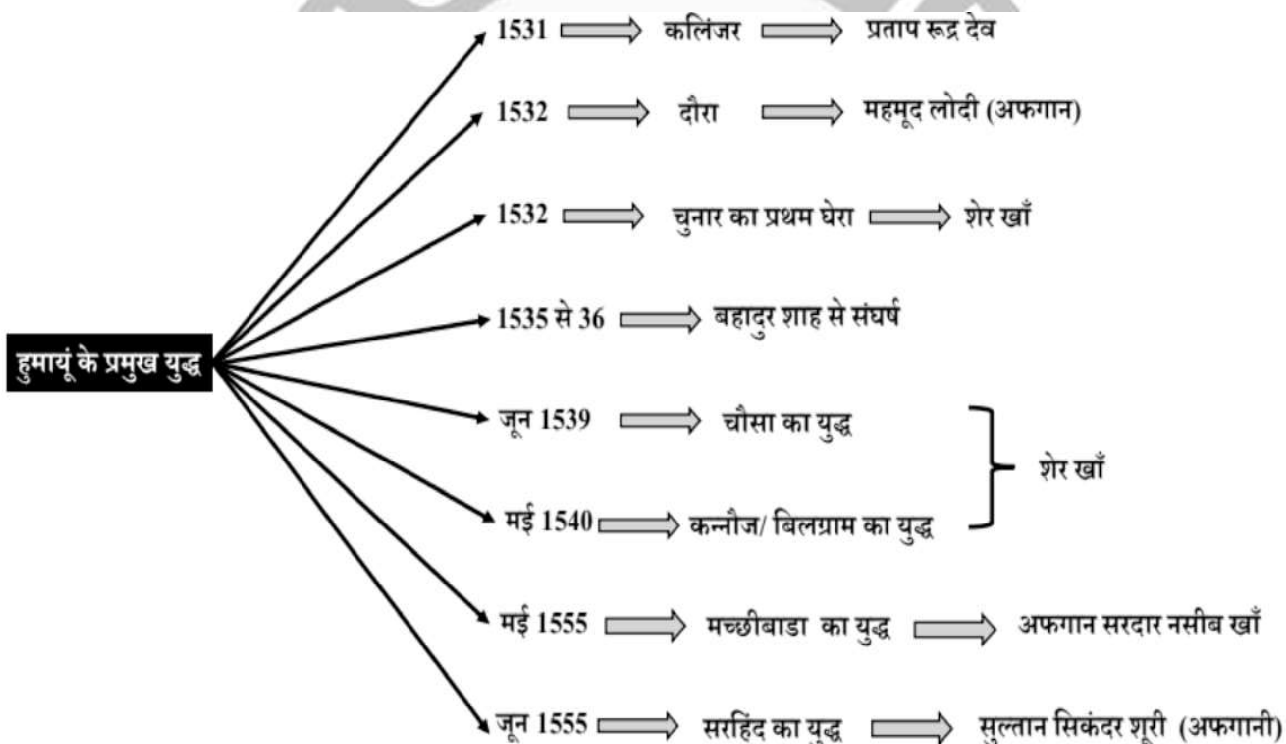
- हुमायूँ का जन्म काबुल में माहम बेगम के गर्भ से हुआ था। हुमायूँ का अर्थ होता है- **भाग्यवान**
- यह बाबर के 4 बेटों में से सबसे बड़ा पुत्र था।
- **हुमायूँ के लिए चुनौती-**
 1. राज्य का बँटवारा
 2. धन की कमी
 3. राजपूत का विरोध
 4. अफगान



- बाबर ने अफगान शासकों का पूर्णतः सफाया नहीं किया था, जिस कारण अफगान शासक हुमायूँ के लिए सबसे बड़ा खतरा बनने लगे।
- हुमायूँ का प्रारम्भिक शासन शांतिपूर्ण था। किन्तु हुमायूँ के ही प्रमुख विरोधी थे-एक गुजरात का शासक बहादुर शाह तथा एक बिहार का शासक शेरशाह सूरी।
- हुमायूँ ने सर्वप्रथम पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के साथ हिस्सा लिया था, यह उसके जीवन का प्रथम युद्ध था।
- चित्तौड़ की रानी, कर्णवाही ने गुजरात के शासक बहादुर शाह के अत्याचार से बचने के लिए हुमायूँ से मदद मांगी और भेंट स्वरूप उसे राखी दिया।
- हुमायूँ कर्णवाही की रक्षा के लिए सेना लेकर चल दिया किन्तु कालींजर के शासक प्रताप रूद्र देव से हुमायूँ का युद्ध हो गया और हुमायूँ के पहुँचने में देर हो गयी तब तक कर्णवाही जौहर कर चुकी थी।
- हुमायूँ बहादुर शाह को पराजित करने के लिए 1531 ई. में सर्वप्रथम कालिंजर अभियान किया।
- कालिंजर अभियान हुमायूँ का शासक बनने के बाद पहला अभियान था।
- हुमायूँ का अफगानों के विरुद्ध पहला अभियान 1532 ई. में दोहरिया (दौरा) का अभियान था। जिसमें हुमायूँ विजयी रहा।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने गौड़ (बंगाल) अभियान किया। इसने बंगाल का नाम जन्मताबाद रखा।
- बंगाल अभियान से लौटते समय उसकी सेना पर शेरशाह सूरी ने 1539 ई. में अचानक चुनार की किला के पास चौसा नामक स्थान पर हुमायूँ पर आक्रमण कर दिया। हुमायूँ की सेना में भगदड़ मच गयी और पराजय की स्थिति में हुमायूँ घोड़ा सहित गंगा नदी में कुद गया। हुमायूँ की जान शिहाबुद्दीन निजाम नामक भिस्ती (मल्लाह) ने बचायी इसी कारण उसने शिहाबुद्दीन निजाम को एक दिन के लिए दिल्ली का शासक बनाया। इसी ने अपने एक दिन के कार्यकाल में चमड़े का सिक्का चलाया।
- इसकी जानकारी हुमायुनामा नामक पुस्तक से मिलती है। जिसकी रचना हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने किया। यह पुस्तक दो भागों में है-प्रथम भाग में बाबर तथा द्वितीय भाग में हुमायूँ की चर्चा है।
- यह मुगलकाल की एक मात्र पुस्तक है जिसकी रचना किसी महिला ने की।
- 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ को हराया और उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने खुद को दिल्ली का शासक घोषित कर दिया।
- भारत से निष्कासन के दौरान हुमायूँ ने अपनी गर्भवती पत्नी हमिदा बानो बेगम को अमरकोट (पंजाब) के राजा वीरसाल के दरबार में छोड़कर चला गया।
- इन्हीं के दरबार में 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अकबर का जन्म हुआ।
- निर्वासन के दौरान हुमायूँ काबुल में रहा। हुमायूँ ने पुनः 1545 ई. में ईरान के शासक की सहायता से कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया।

- 1553 ई. में शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की मृत्यु के बाद अफगान साम्राज्य विघटित होने लगा अतः ऐसी स्थिति में हुमायूँ को पुनः अपने राज्य प्राप्ति का अवसर मिला।
- 1555 ई. में लुधियाना के समीप मच्छीवाड़ा के युद्ध में हुमायूँ ने अफगान सरदार हैवत खान तथा तातार खान को पराजित करके पंजाब जीत लिया।
- 1555 ई. में ही सरहिन्द के युद्ध (चण्डीगढ़) में हुमायूँ के सेनापति बैरमखान ने अफगान सेनापति सिकन्दरशाह शूर को पराजित कर दिया।
- सरहिन्द विजय के पश्चात 1555 ई. में एक बार पुनः दिल्ली के तख्त पर हुमायूँ को बैठने का सौभाग्य मिला।
- हुमायूँ ने दिल्ली में दिन पनाह नामक पुस्तकालय बनवाया था। इसी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुमायूँ की मृत्यु 1556 ई. में हो गयी।

- हुमायूँ अफिम के सेवन का आदि था। यह ज्योतिष विद्या में विश्वास रखता था जिस कारण सप्ताह के प्रत्येक दिन अलग-अलग रंग के वस्त्र पहनता था।
- हुमायूँ के दरबार में दो प्रमुख चित्रकार-मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद रहते थे।
- लेनलपुल ने लिखा है हुमायूँ का अर्थ होता है खुशनसीब व्यक्ति लेकिन हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाते रहा और लड़खड़ाते हुए ही उसकी मृत्यु हो गयी।
- हुमायूँ की कब्र ईरानी संस्कृति से प्रभावित है, जिसका वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। यह उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम की हुमायूँ को अमूल्य भेंट थी। यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।



शेरशाह सूरी (1540-1545)

- शेरशाह → इस्लामशाह → फीरोज शाह → मोहम्मद शाह
- शेरशाह सूरी का बचपन का नाम फरीद खान था। इसके पिता हसन अली थे, जो बिहार के जागीरदार थे और बहलोल लोदी के दरबार में कार्यरत थे।
- हसन अली के मृत्यु के बाद शेरशाह सूरी बिहार के नुमानी शासकों के दरबार में काम करने लगा।



- बहार अली नुमानी ने ही फरीद को शेरशाह सूरी की उपाधि दिया।
- शेरशाह सूरी द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक कहा जाता है।
- शेरशाह सूरी ने जिस वंश की स्थापना किया उसे सूरी वंश कहते हैं। सूरी वंश की जानकारी अब्बास खान शेरखानी की रचना तौफा-ए-अकबरशाही से मिलती है।
- शेरशाह सूरी को मध्यकाल में एक प्रबल प्रशासक के रूप में देखा जाता है।
- 1538 ई. के बंगाल अभियान के बाद हुमायूँ जब लौट रहा था तो 1539 ई. में चौसा नामक स्थान पर शेरशाह ने आक्रमण कर दिया और हुमायूँ को पराजित किया। 1540 ई. के विलग्राम

(कन्नौज) के युद्ध में हुमायूँ को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया और 1540 ई. में दिल्ली का शासक बन गया।

- ☛ इसने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण किया।
- ☛ 1543 ई. में शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण किया। माना जाता है कि शेरशाह ने इस अभियान में धोखे से राजपूत शासक पूनमल को मार डाला। पूनमल की मृत्यु के बाद राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर लिया। रायसीन की यह घटना शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।
- ☛ 1544 ई. में शेरशाह सूरी ने मेवाड़ अभियान किया और यहां के शासक मालदेव को पराजित किया। मेवाड़ विजय कठिन होने के कारण शेरशाह सूरी ने कहा कि मैं एक मुट्ठी बाजरे के लिए पूरे भारत को खो चुका था।
- ☛ 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने कलिंगर अभियान किया। यह अभियान एक दासी (Dancer) के लिए था। इस समय यहाँ के राजा कीर्त सिंह थे। इस अभियान के दौरान शेरशाह सूरी के सेना द्वारा छोड़े गये तोप का गोला कलिंगर की किला से टकराकर वापस शेरशाह-सूरी के समीप आ गिरा। जिससे शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गयी। कलिंगर का वर्तमान नाम महोबा है। यह मध्यप्रदेश में है। शेरशाह सूरी को सासाराम में दफनाया गया।
- ☛ शेरशाह का मकबरा सासाराम में है। कनिंघम ने शेरशाह के मकबरे को ताजमहल से भी सुंदर कहा है।
- ☛ इसका बेटा इस्लामशाह योग्य था किन्तु 1553 ई. में आकस्मिक मृत्यु हो गयी।
- ☛ इसके बाद फिरोजशाह शासक बना जिसे उसके मामा (मुबारिज खान) ने मरवा दिया।
- ☛ शेरशाह सूरी के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना और इस वंश का अंतिम शासक सिकन्दर शाह सूरी था।



शेरशाह सूरी का प्रशासनिक व्यवस्था

- ☛ शेरशाह सूरी एक प्रबल प्रशासक था इसने बहुत से सुधार किये। इन सारे सुधार को अकबर ने भी अपनाया था। इसी कारण शेरशाह सूरी को अकबर का पथ प्रदर्शक (रास्ता दिखाने वाला) या अकबर का पूर्वगामी शासक कहा जाता है।
- ☛ टोडरमल शेरशाह सूरी के दरबार में भी सेवा दे चुके थे।
- ☛ शेरशाह सूरी ने पाटलीपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा था।
- ☛ इसने Grand Trunk (G.T.) Road का निर्माण करवाया।
- ☛ इसने किसानों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए रैय्यतवाड़ी व्यवस्था शुरू किया। यह किसानों को रैय्यत कहकर बुलाता था।
- ☛ कर की चोरी न हो इसलिए उसने भूमि की नाप करवायी इस व्यवस्था को जब्ती व्यवस्था कहा गया।

- ☛ इसने पट्टा एवं कबुलियत नामक नयी व्यवस्था शुरू की। पट्टा पर कर का विवरण रहता था कि कितना कर लिया जाएगा और किस समय लिया जाएगा।
- ☛ कबुलियत वह दस्तावेज था जिस पर किसान इस बात की सहमति देता था कि वह पट्टा में दिये गए कर को देन में सहमत है।
- ☛ भूमि की माप कराने के लिए जरीबान नामक कर लिया जाता था, जो किसान भूमि का माप नहीं कराता था उससे मुहाबिलाना नामक कर लिया जाता था।
- ☛ शेरशाह सूरी के समय जौनपुर शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र था। इसे भारत का शिराज (सर का ताज) कहा जाता था।
- ☛ शेरशाह सूरी ने सोने का जो सिक्का चलाया उसे **असफ़ी** या **मोहरा** कहा गया है। शेरशाह सूरी ने जो चांदी का सिक्का चलाया उसे **रुपया** कहा गया। इसके तांबे के सिक्का को दाम कहा जाता था। शेरशाह के शासनकाल में चांदी के रुपये एवं तांबे के दाम का अनुपात 1 : 64 था।
- ☛ इसने भूमि की जांच करने के लिए एक कानूनगो नामक अधिकारी की नियुक्ति किया।
- ☛ इसने दिल्ली में किला-ए-कुहना नामक मस्जिद का निर्माण कराया। इसे ही पुराना किला के नाम से जाना जाता है।
- ☛ इतिहासकार कहते हैं कि शेरशाह सूरी के समय यदि कोई औरत आधी रात को सोना लेकर जाती है, तो कोई भी व्यक्ति उसके सोना को छुने की हिम्मत नहीं कर सकता है।
- ☛ यह इस बात की ओर इशारा करता है कि शेरशाह सूरी के समय पुलिस व्यवस्था बहुत अच्छी थी।
- ☛ इसके कठोर न्याय तथा दण्ड व्यवस्था के कारण अपराध बहुत कम होते थे।
- ☛ शेरशाह के समक्ष अमीर-गरीब, मित्र, दुश्मन सभी एक समान होते थे।

जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर (1556-1605 ई.)

- ☛ अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हुआ था। अकबर की माँ हमिदा बानो बेगम थी। इसकी धाय माँ माहम अनंगा थी।
- ☛ 1555 ई. में हुमायूँ जब भारत पर पुनः आक्रमण किया और मच्छीवाड़ा का युद्ध लड़ा। इस युद्ध में हुमायूँ के साथ अकबर भी भाग लिया। यह युद्ध अकबर के जीवन का पहला युद्ध था।
- ☛ 14 फरवरी, 1556 ई. को पंजाब के कालानौर (गुरुदासपुर) में मिर्जा अब्बुल कासिम ने अकबर का राज्याभिषेक कराया।
- ☛ राज्याभिषेक के समय अकबर अल्पायु था अतः वैरम खान को अकबर का संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।



- ☛ 1556 ई. के पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर के सेना का नेतृत्व वैरम खान ने किया और इस युद्ध में वैरम खान ने हेमू को पराजित कर दिया।
 - ☛ यह युद्ध अकबर का शासक बनने के बाद पहला युद्ध था।
 - ☛ अकबर ने वैरम खान के संरक्षण में शासन आरम्भ किया जिस कारण वैरम खां अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया।
 - ☛ वैरम खान की ईमानदारी को देखकर अकबर ने उसे खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया।
 - ☛ वैरम खान शिया था। जबकि दिल्ली की अधिकांश जनता सुन्नि था। यही विवाद आगे चलकर युद्ध का रूप लिया और तिलवाड़ा का युद्ध 1560 ई. में अकबर ने वैरम खान को हरा दिया और वैरम खां के आगे दो प्रस्ताव रखा—
1. वैरम खा या तो दूर के किसी सूबा (राज्य) के सूवेदार बन जाए।
 2. या तो हज यात्रा पर चले जाएं।
- ☛ वैरम खान ने हज यात्रा को चुना। हज पर जाते समय गुजरात के मुबारक खां नामक व्यक्ति ने गुजरात के पाटन नामक स्थान पर वैरम खां की हत्या कर दी।
 - ☛ वैरम खां का बेटा अब्दुल रहीम था तथा उसकी पत्नी सलीमा बेगम थी। अकबर ने सलीमा बेगम से शादी कर ली।
 - ☛ 1560 ई. में अकबर जैसे ही वैरम खां के संरक्षक से मुक्त हुआ तो अपनी धाय माँ माहम अनगा के प्रभाव में आ गया और दो वर्षों तक उसके प्रभाव में रहा। इस दो वर्ष के शासन को पेटीकोट शासन, पर्दा प्रथा का शासन, हरम दल का शासन या अतका खेल का शासन कहा गया।

अकबर की धार्मिक नीति

- ☛ 1562 ई. में अकबर हरम दल के प्रभाव से मुक्त हो गया।
- ☛ अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अन्त, 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर का अन्त तथा 1564 में जजिया कर का अन्त कर दिया गया।
- ☛ 1571 ई. में अकबर ने फतेहपुर सिकरी शहर की स्थापना किया। 1575 ई. में अकबर ने इबादत खाना की स्थापना फतेहपुर सिकरी में किया। इस इबादतखाना में सभी धर्मों के लोग बृहस्पतिवार के दिन इकट्ठा होते थे और अपने अपने धर्म की विशेषता का उल्लेख करते थे। किन्तु बहुत ही जल्द यह इबादतखाना को बन्द करना पड़ा क्योंकि यहां मारपीट शुरू हो जाती थी। अकबर के इस नीति को सुलह-ए-कुल की नीति कहा गया।
- ☛ 1579 ई. में अकबर ने मजहर की घोषणा की। इसके तहत धार्मिक मामले में अकबर सर्वोपरि हो गया। मजहर के तहत अकबर ने धार्मिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया। धार्मिक विवादों को राजा हल करेगा किन्तु कुरान पर राजा का कोई अधिकार नहीं होगा।

- ☛ 1582 ई. में अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक नया धर्म चलाया। यह धर्म मानने के लिए कोई बाध्य नहीं था। यह लोगों की इच्छा पर था।
- ☛ दीन-ए-इलाही धर्म को मानने वाला एक मात्र हिन्दू महेशदास (बीरबल) था।
- ☛ दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान पुरोहित (पंडित) अबुल फजल था। उनके धार्मिक गुरु अब्दुल लतीफ था।
- ☛ 1583 ई. में अकबर ने हिजरी संवत के जगह एक नया कैलेंडर इलाही संवत जारी किया।

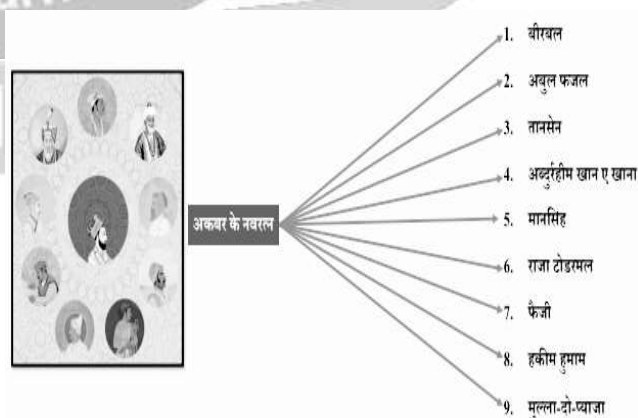
मुद्रा प्रणाली

- ☛ अकबर ने राम-सीता प्रकार के सिक्के चलाए। अकबर ने रुपया तथा दाम सिक्के को भी निरन्तर जारी रखा।
- ☛ 1 रुपया (अकबर) = 40 दाम
- ☛ 1 रुपया (शेरशाह) = 64 दाम
- ☛ अकबर के समय वृत्ताकार सिक्का “इलाही” तथा आयताकार सिक्का “जलाली” कहलाता था।
- ☛ 1 इलाही = 10 रुपया

अकबर के समय भू-राजस्व व्यवस्था

- **जब्ती प्रणाली**
- ☛ भूमि के माप (आकार) के आधार पर लगान (Tax) निर्धारण व्यवस्था को जब्ती प्रणाली कहते हैं।
- **आईन-ए-दहसाला**
- ☛ दस वर्षों के औसत ऊपज को आधार मानकर लगान (Tax) का निर्धारण आइन-ए-दहसाला कहलाता है। यह लगान निर्धारण की एक औसत प्रणाली है। इसका श्रेय टोडरमल को जाता है।

अकबर के नवरत्न



- ☛ अकबर के दरबार में विभिन्न क्षेत्र के 9 विद्वान रहते थे जिन्हें नवरत्न कहा जाता है।

1. बीरबल

- इसका असली नाम महेश दास था। यह दिन-ए-इलाही को मानने वाले एक मात्र हिन्दू (राजपूत) थे। यह अकबर के प्रधान सलाहकार थे। इनकी मृत्यु 1586 ई. में कश्मीर के युसूफ जाई के विद्रोह को दबाते समय हो गयी। अकबर ने इन्हें कविराज व राजा की उपाधि प्रदान किया था।

2. तानसेन

- यह अकबर के दरबार में सबसे प्रसिद्ध संगीतकार थे। इनका जन्म ग्वालियर में हुआ। इनका मूल नाम (असली नाम) राम तनु पाण्डेय था। इनकी प्रमुख रचना मिया का टोपी, मियां का सारंग, मियां का मल्हार, दरबारी कन्हारा था। अकबर ने इन्हें कण्ठा भरण वाणी विलास की उपाधि दी थी।

3. मानसिंह

- यह आमेर के राजा भारमल का पोता, भगवानदास का बेटा था। अकबर ने सर्वाधिक युद्ध इसी के नेतृत्व में जीता। अकबर ने इन्हें 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि दी थी।

4. टोडरमल

- यह अकबर के दरबार में भूमि तथा राजस्व सुधारक थे। इन्होंने राजस्व के क्षेत्र में एक नई व्यवस्था आईने दहशाला लेकर आये। राजा टोडरमल अकबर से पहले शेरशाह के दरबार में कार्यरत थे।

5. अबुल फजल

- यह दिन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था। इसने अकबरनामा तथा आइन-ए-अकबरी पुस्तक लिखा। जिसमें अकबर की चर्चा है। यह पुस्तक सात साल में लिखी गयी। इस पुस्तक के 3 भाग हैं। तीसरा भाग आइने अकबरी कहलाता है। जो खुद अबुल फजल की आत्मकथा है। 1602 ई. में वीर सिंह बुन्देला ने जहांगीर के कहने पर इनकी हत्या कर दी। जब वो दक्षिण से आगरा की ओर आ रहे थे।

6. फैजी

- अबुल फजल के बड़े भाई थे जो कवि के पद पर थे। इन्होंने गीता तथा लीलावती पुस्तक का फारसी अनुवाद किया।

7. अब्दुल रहीम खान-ए-खाना

- यह वैरम खां का पुत्र था। अकबर ने इसे अनुवाद विभाग का प्रधान बनाया। इसने बाबर की आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी का फारसी में अनुवाद किया और इसी अनुवादित पुस्तक का नाम बाबरनामा है।

8. मुल्ला-दो-प्याजा

- यह अरब का रहने वाला था जो प्रमुख व्यंगकार (मजाकिया) था। इसे भोजन के साथ दो प्याज खाने की आदत थी।

9. हकीम हुकाम

- यह अकबर के दरबार में बावर्ची के पद पर थे।

Remark :- तुलसीदास अकबर के समकालीन थे। अकबर के कहने के बाद भी वे नवरत्न में शामिल नहीं हुए।

मनसबदारी व्यवस्था

- यह अकबर की सैन्य तथा प्रशासनिक व्यवस्था थी।
- युद्ध के समय सभी मनसबदार अपनी सेना लेकर आते थे। सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार औरंगजेब के पास थे।

अकबर की राजपूत नीति

- अकबर की राजपूत नीति "दमन और समझौते" की नीति थी।
- राजपूत नीति के तहत अकबर राजपूत राजाओं की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था।
- अकबर ने राजपूत राजाओं को जागीरदार तथा पैतृक जागीर भूमि पर शासन का अधिकार दिया और उनके राजा का पद भी बना रहा तथा खुद को अकबर सम्राट कहता था। किन्तु अकबर ने उन्हें स्वयं के सिक्के चलाने का अधिकार छीन लिया और उनके क्षेत्र में मुगलशाही सिक्का का प्रचलन करवाया।

अकबर का सैन्य अभियान

- 1562 ई. में आमेर पर आक्रमण किया। आमेर की राजधानी जयपुर थी और आमेर के राजा भारमल (कछवाहा राजपूत) थे।
- राजा भारमल एक मात्र राजपूत राजा थे जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वेच्छा से स्वीकार किया और अपनी बेटी जोधाबाई (हरखू बाई) का विवाह अकबर से करा दिया। वे अपने बेटे भगवान दास तथा पोता मान सिंह को अकबर की सेवा में भेजा। अकबर ने जोधाबाई को मरियम-उज्ज-जमानि की उपाधि दिया।
- गोंडवाना (मध्यप्रदेश) की रानी दुर्गावती (संग्राम सिंह की विधवा) ने कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं किया। यह एक मात्र महिला थी जिसने अकबर का सर्वाधिक विरोध किया।
- 1564 ई. में आसफ खां ने रानी दुर्गावती को पराजित कर दिया। अंततः गोंडवाना (मध्यप्रदेश) पर अकबर का अधिकार हो गया।
- 1567 ई. में अकबर ने मेवाड़ अभियान किया। इस समय मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ थी और वहां के राजा उदय सिंह थे।
- मेवाड़ अभियान पूरा होने से पहले ही अकबर लौट गया। पुनः अकबर ने 1576 ई. में मेवाड़ अभियान किया और हल्दीघाटी के युद्ध में उदय सिंह के पुत्र महाराणा प्रताप को पराजित कर दिया। इस युद्ध में अकबर की सेनापति मानसिंह थे। जबकि महाराणा प्रताप का सेनापति हकीम खान शूर थे।
- प्रारम्भ में युद्ध महाराणा प्रताप जीत रहे थे किन्तु यह अपवाह फैलाया गया कि अकबर भी युद्ध में शामिल हो गया। जिससे

मुगल सेना का मनोबल बढ़ गया। इसके बाद महाराणा प्रताप जंगल में भाग गए और इस प्रकार मेवाड़ अभियान अधूरा रह गया।

- ☛ धीरे-धीरे महाराणा प्रताप ने पुनः अपने अधिकांश क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- ☛ 1572 ई. में अकबर ने गुजरात अभियान किया। इसी समय अकबर ने पहली बार समुद्र (खम्भात की खाड़ी) को देखा था। यहीं पर अकबर पुर्तगालियों से भी मिला था।
- ☛ अकबर ने जब गुजरात को हराकर वापस लौटा तो गुजरात के शासकों ने अकबर की अधिनता मानने से अस्वीकार कर दिया। इसी कारण अकबर ने पुनः 1573 ई. में गुजरात अभियान किया। यह अकबर का सबसे द्रुतगामी (9 दिन) अभियान था। इसी गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा का निर्माण करवाया था।
- ☛ कश्मीर के यूसूफजाई कबीले के विद्रोह में ही बीरबल की मृत्यु हो गयी।

दक्षिण भारत अभियान

- ☛ अकबर ने दक्षिण भारत विजय के लिए अब्दुल रहीम और उसके पुत्र मुराद के नेतृत्व में सेना भेजा।
- ☛ अकबर दक्षिण भारत अभियान करने वाला पहला मुगल शासक था।
- ☛ अकबर ने पूरी तरह से दक्षिण भारत को नहीं जीता था।
- **दक्षिण भारत के 4 प्रमुख राज्य थे-**
 1. खानदेश
 2. अहमदनगर
 3. बीजापुर
 4. गोलकुण्डा
- ☛ खानदेश को दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार कहते थे। खानदेश ने स्वतः अकबर की अधिनता स्वीकार कर लिया।
- ☛ अकबर ने अहमदनगर की शासिका चांद बीबी से युद्ध करके उससे बरार तथा अमदनगर का क्षेत्र जीत लिया।
- ☛ बीजापुर के शासक ने भी अकबर की अधिनता स्वीकार कर लिया।
- ☛ 1601 ई. में खान देश ने विद्रोह कर दिया जिसे असीरगढ़ के युद्ध में अकबर ने विद्रोह समाप्त कर दिया। यह युद्ध अकबर ने रिश्वत देकर जीता था। असीरगढ़ का युद्ध अकबर के जीवन का अंतिम युद्ध था।
- ☛ इस प्रकार असीरगढ़, बीजापुर, अहमदनगर, खानदेश तथा बरार पर मुगलों का अधिकार हो गया।
- ☛ 1602 ई. में जहांगीर ने अपने पिता के विरुद्ध इलाहाबाद में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए अकबर ने अबुल फजल को भेजा। किन्तु जहांगीर के कहने पर वीर सिंह बुन्देला ने इनकी हत्या कर दी।
- ☛ 1605 ई. में डायरिया के कारण अकबर की मृत्यु हो गयी।

Remark :- अकबर के गुरु अब्दुल लतीफ थे जो एक योग्य व्यक्ति थे किन्तु अकबर निरक्षर ही रह गया।

Note :- फिरोज शाह तुगलक (F.S.T.) को सल्तनत काल का अकबर कहा जाता है।

नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर (1605-1627 ई.)

- ☛ जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. को मरियम इजवानि (हरखु बाई/जोध बाई) के गर्भ से हुआ। इसके बचपन का नाम सलीम था। मानबाई तथा जगत गोसाई इसकी प्रारम्भ में दो पत्नीयां थी। जगत गोसाई जहांगीर की अत्यधिक शराब पीने से अप्रसन्न थी जिस कारण इसने आत्महत्या कर ली।
- ☛ जहांगीर ने आगरा के किले में न्याय के लिए सोने की जंजीर टंगवायी थी जिसमें 12 घण्टियां थी। जहांगीर न्याय के लिए प्रसिद्ध था। इसने अपराधी के नाक-कान काटने और घर कुर्को करने का आदेश दिया था।
- ☛ जहांगीर ने मद्यपान (नशा) पर रोक लगा दिया।
- ☛ 1606 ई. ये जहांगीर का बेटा खुसरो ने मानसिंह के साथ मिलकर जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह में 5वें गुरु अर्जुन देव ने खुसरो की सहायता किया। जिस कारण जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव को फांसी दे दी।
- ☛ 1615 ई. में जहांगीर ने चित्तौड़ अभियान किया और यहां के शासक अमर सिंह को पराजित कर दिया और चित्तौड़ को मुगल साम्राज्य में मिला दिया। इस प्रकार चित्तौड़ अभियान जहांगीर के समय पुरा हुआ।
- Note :-** मेवाड़ (चित्तौड़) का पहला अभियान अकबर ने 1567 ई. में किया। उस समय राजा उदयसिंह थे। दूसरा अभियान अकबर ने 1576 ई. में किया। उस समय राजा महाराणा प्रताप थे और अंतिम और तीसरा अभियान जहांगीर ने 1615 ई. में किया। उस समय राजा अमर सिंह थे।
- ☛ 1622 ई. में कंधार के शासकों ने मुगल क्षेत्र में रहने से इंकार कर दिया। शाहजहां का काल आते-आते कंधार पूरी तरह भारत से स्वतंत्र हो गया। कंधार को भारत का प्रवेश द्वार कहा जाता था।
- ☛ जहांगीर के शासनकाल को चित्रकला का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- ☛ जहांगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि कोई भी चित्र चाहे वह किसी मृत व्यक्ति या जीवित व्यक्ति द्वारा बनाया गया हो, मैं देखते ही तुरंत बता सकता हूं कि यह किस चित्रकार की कृति है। यदि किसी चेहरे के आंख किसी एक चित्रकार ने, भौंह किसी और ने बनाई हो, तो भी यह जान लेता हूं कि आंख किसने और भौंह किसने बनायी है।
- ☛ जहांगीर दूसरा ऐसा विद्वान शासक था जिसने अपनी आत्मकथा स्वयं लिखी। इसकी आत्मकथा का नाम तुजुक-ए-जहांगीर



था जो फारसी भाषा में लिखा गया। किन्तु जहांगीर अपनी आत्मकथा पूरा होने से पहले ही मर गया। जहांगीर की आत्मकथा को मोतविन्द खान ने पूरा किया।

- ☛ जहांगीर ने अपनी प्रेयसी (प्रेमिका) अनारकली के लिए 1615 ई. में लाहौर में एक सुंदर कब्र बनवायी और इस पर यह प्रेमपूर्वक अभिलेख लिखवाया कि-“यदि मैं अपनी प्रेयसी का चेहरा एक बार पुनः देख पाता, तो कयामत के दिन तक अल्लाह को धन्यवाद देता।”
- ☛ जहांगीर धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था। रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया और अपनी कलाई पर राखी बंधवायी। जहांगीर ने दीवाली के दिन जुआ खेलने की इजाजत दे रखी थी।
- ☛ जहांगीर ने सूरदास को आश्रय दिया था और उसी के संरक्षण में ‘सूरसागर’ की रचना हुई।
- ☛ जहांगीर ने एक नयी प्रथा चलायी जिसके अनुसार पुरुषों का कान-छिदवाकर मूल्यवान रत्न पहनना फैशन बन गया।
- ☛ अशोक के कौशाम्बी अभिलेख तथा समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ती अभिलेख पर जहांगीर ने भी लेख लिखवाया था।
- ☛ 1608 ई. में इंग्लैंड के राजा जेम्स-I का राजदुत कैप्टन हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया किन्तु जहांगीर ने उसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे English खान की उपाधि दिया। हॉकिन्स के पास अकबर के नाम का पत्र था किन्तु अकबर की मृत्यु हो चुकी थी। हॉकिन्स फारसी में बात करता था।
- ☛ 1615 ई. में पुनः इंग्लैंड के राजा जेम्स-I का राजदूत टॉमस रॉ जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया। पहली बार जहांगीर ने टॉमस रॉ को ही व्यापारिक छूट दिया था।
- ☛ जहांगीर के समय ही पुर्तगालियों ने भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू की खेती प्रारंभ किया।
- ☛ 1627 ई. में शाहजहाँ ने लाहौर में जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उस विद्रोह को दबाने के लिए जहांगीर तथा नूरजहाँ दोनों लाहौर पहुंचे।
- ☛ जहांगीर का सेनापति महावत खान शाहजहाँ के साथ मिल गया और नूरजहाँ तथा जहांगीर को कैदी बना लिया गया। किन्तु नूरजहाँ के प्रयास से वे दोनों जल्दी ही कैद से मुक्त हो गये। इसी वर्ष लाहौर के शहदरा में जहांगीर की मृत्यु हो गयी। यहीं पर जहांगीर का मकबरा है। इस मकबरा को नूरजहाँ ने बनवाया।

नूरजहाँ

- ☛ नूरजहाँ का असली नाम मेहरून निशा था।
- ☛ नूरजहाँ अलीकूली वेग (शेर अफगान) की पत्नी विधवा थी। इसे जहांगीर के दरबार में अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा के लिए लाया गया था।



- ☛ नवरोज त्यौहार के दिन जहांगीर ने पहली बार नूरजहाँ को देखा और उसकी सुन्दरता को देखकर उसे नूरमहल की उपाधि दिया। यह पारसी थी।
- ☛ 1611 ई. में जहांगीर ने उससे विवाह कर लिया और उसे नूरजहाँ की उपाधि दिया। नूरजहाँ जहांगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। ऐसा माना जाता है कि शाही आदेशों पर बादशाह के बाद नूरजहाँ का भी हस्ताक्षर होता था।
- ☛ नूरजहाँ के भाई का नाम आसफ खां था जिसकी पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) से 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह हुआ। नूरजहाँ के माता का नाम अस्मत बेगम था। इसी ने पहली बार गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोज की थी।
- ☛ नूरजहाँ के पिता का नाम ग्यासबेग था, जिसे जहांगीर ने एतमाउद्दौला की उपधि दिया था।
- ☛ नूरजहाँ ने आगरा में एतमउद्दौला का मकबरा बनवाया यह भारत में बेदाग सफेद संगमरमर से बनने वाला पहला मकबरा था। इसी में पहली बार इटली की पिप्पेट्री डोरा शैली का प्रयोग किया गया।

शिहाबुद्दीन मोहम्मद शाहजहाँ (1627-1657 ई.)

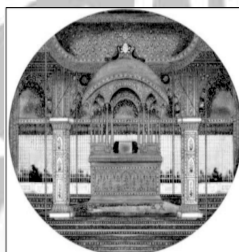
- ☛ शाहजहाँ का जन्म 5 जनवरी, 1592 को लाहौर में जगत गोसाई के गर्भ से हुआ था।
- ☛ शाहजहाँ के बचपन का नाम खूर्म था।
- ☛ 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह नूरजहाँ के भाई आसफ खान की पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम से हुआ जिसे मुमताज कहा जाता था। शाहजहाँ ने इसे मल्लिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की थी।
- ☛ मुमताज के 14 संतान हुए। जिसमें से 7 संतान जीवित थे। इनकी मृत्यु 1631 में 14वें संतान के प्रसव पीड़ा के कारण हुयी।
1. दारा शिकोह 2. शाहशुजा 3. औरंगजेब 4. मुरादबख्स 5. जाहांआरा 6. रोशन आरा 7. गौहर आरा।
- ☛ मुमताज की कब्र पर मुमताज महल बनाया गया इसे ही ताजमहल कहते हैं।
- ☛ ताजमहल के वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे। जबकि ताजमहल को इशा खां के देख रेख में बनाया गया।
- ☛ शाहजहाँ का संघर्ष पुर्तगालियों से हुआ। शाहजहाँ ने पुर्तगाली व्यापारिक कोठी हुगली पर अधिकार कर लिया।
- ☛ शाहजहाँ का संघर्ष 6वें सिख गुरु हरगोविन्द के साथ ही शिकार करने के दौरान हुआ था।
- ☛ शाहजहाँ ने दक्षिण भारत अभियान की जिम्मेदारी औरंगजेब को दे दिया और औरंगजेब ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक अहमदनगर, बरार, तेलंगना तथा खान देश को जीत लिया। शाहजहाँ ने औरंगजेब को दक्षिण भारत का सूबेदार बना दिया और औरंगजेब ने अपना केंद्र महाराष्ट्र के औरंगाबाद को बना लिया।



- ☛ शाहजहां ने अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।
- ☛ शाहजहां के समय को स्थापत्यकला का स्वर्णकाल कहा जाता है क्योंकि इसमें वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत से इमारत बनवाये गए। जैसे- दिल्ली का लाल किला, दिल्ली का जामा मस्जिद, आगरा में ताजमहल, आगरा के लाल किला में मोती मस्जिद, लाहौर में शीश महल आदि।

Remark :- दिल्ली के लाल किला में मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।

- ☛ शाहजहां ने दिल्ली के लाल किला में दीवान-ए-आम तथा दीवाने-ए-खास की भी स्थापना किया।
- ☛ दीवाने-आम में साधारण मुद्दे जबकि दीवाने-खास में महत्वपूर्ण मुद्दे सुलझाए जाते थे।

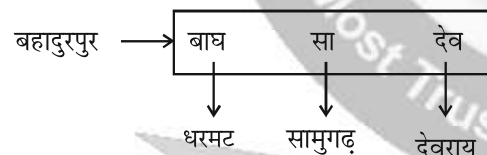


- ☛ शाहजहां ने मयूर सिंहासन (तख्त-ए-ताऊस) बनवाया था। जिसपर कोहिनूर हीरा लगा हुआ था। यह मयूर सिंहासन दीवाने-आम में रखा रहता था। मयूर सिंहासन का वास्तुकार बे बादल खां था।

Remark :- मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।

- ☛ शाहजहां ने अपने जीवन के समय में ही दारा शिकोह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।
- ☛ शाहजहां जब बीमार पड़ा तो यह अफवाह फैल गयी थी कि शाहजहां की मृत्यु हो गयी। अतः पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध प्रारंभ हो गया।

➤ उत्तराधिकार के लिए चार युद्ध हुए-



➤ बहादुरपुर का युद्ध (बनारस)

- ☛ यह युद्ध फरवरी, 1658 ई. में हुआ इस युद्ध में दारा शिकोह के पुत्र सुलेमान ने शाहशुजा को पराजित कर दिया।

➤ धरमत का युद्ध (उज्जैन)

- ☛ यह युद्ध अप्रैल, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। जिसमें औरंगजेब जीत गया।

➤ सामुगढ़ का युद्ध (आगरा)

- ☛ यह युद्ध जून, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजेब जीत गया और आगरा में अपना राज्याभिषेक कराया।
- ☛ इस युद्ध को जीतने के बाद औरंगजेब शाहजहां को बन्दी बना लिया और उसे यमुना नदी के किनारे आगरा के किला में कैद कर दिया। उसे खाने में केवल एक भोजन देने को कहा जिस पर शाहजहां ने चना मांगा था।

- ☛ 1666 ई. में शाहजहां की मृत्यु हो गयी। यह मुगल सल्तनत वंश का एक मात्र शासक था जिसका अंतिम संस्कार नौकर-चाकर ने किया। इसे ताजमहल में दफनाया गया।

➤ देवराय का युद्ध (अजमेर)

- ☛ यह युद्ध अप्रैल, 1659 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजेब जीत गया और दारा शिकोह की हत्या कर दिया गया। इस युद्ध को जीतने के बाद औरंगजेब ने दिल्ली में अपना दुबारा राज्याभिषेक कराया। इस प्रकार फिरोजशाह तुगलक के बाद औरंगजेब ऐसा दुसरा शासक हुआ जिसने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।
- ☛ दारा शिकोह को इतिहासकार लेनपुल ने साम्प्रदायिक उदारता के कारण लघु अकबर कहा।

आलमगीर औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- ☛ औरंगजेब का जन्म 1618 ई. में उज्जैन के दोहद नामक स्थान पर मुमताज के गर्भ से हुआ था। जबकि औरंगजेब का अधिकांश समय अपनी दादी नूरजहाँ के पास बीता।
- ☛ औरंगजेब के गुरु पीर मुहम्मद हकीम थे।
- ☛ औरंगजेब का विवाह फारस (ईरान) की राजकुमारी दिलरास बानो बेगम (रबिया बीबी) से हुआ।
- ☛ औरंगजेब ने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।

1. सामुगढ़ विजय (1658 ई.) के बाद
2. देवराय विजय (1659 ई.) के बाद।

- ☛ इसके समय मुगलसत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर थी।
- ☛ औरंगजेब ने मीर जुमला को भेजकर कूचबिहार, असम तथा आराकाम के राजा से चटगांव को जीत लिया।
- ☛ औरंगजेब ने शाइस्ता खां को भेजकर बंगाल जीत लिया तथा पुर्तगालियों को दण्ड दिया और उनसे सोनद्वीप छीन लिया गया।

➤ बीजापुर पर अधिकार

- ☛ औरंगजेब ने बीजापुर जीतने के लिए जयसिंह, बहादुर खान एवं दिलेर खान को भेजा किन्तु वे लोग सफल नहीं हुए। अंततः औरंगजेब स्वयं आक्रमण करके बीजापुर को जीत लिया।
- ☛ औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को 9वें गुरु तेगबहादुर ने संरक्षण दे दिया जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर उनसे इस्लाम कबूल करने को कहा और उन्होंने इस्लाम कबूल नहीं किया तो औरंगजेब ने उनकी हत्या उसी स्थान पर कर दी। जहां आज शीशगंज गुरुद्वारा है।
- ☛ अकबर-II को शिवाजी का पुत्र सम्भा जी ने भी संरक्षण दिया था। जिस कारण औरंगजेब ने सम्भा जी की खाल उधेड़ कर भूसा भर दिया और बीच चौराहे पर टांग दिया। और अपने पुत्र अकबर द्वितीय का आंख निकाल लिया।
- ☛ औरंगजेब का सर्वाधिक विरोध दक्षिण भारत में मराठा शिवाजी ने किया था।
- ☛ औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शाइस्ता खां को भेजा, किन्तु शिवाजी ने शाइस्ता खां की हत्या कर दी।
- ☛ 1665 ई. में औरंगजेब ने राजा जय सिंह को शिवाजी को हराने के लिए भेजा। जय सिंह ने शिवाजी को पराजित करके पुरन्दर की संधि किया। इस संधि के तहत शिवाजी औरंगजेब से

मिलने 1666 ई. में आगरा पहुंचे। किन्तु औरंगजेब ने उन्हें थोखे से कैद करके जयपुर महल में कैद कर दिला। शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर वहां से भाग गये।

- ☛ 1679 ई. औरंगजेब ने दक्षिण भारत में पुनः जजिया कर लगा दिया।
 - ☛ औरंगजेब सुन्नी मुसलमान था। यह कट्टर तथा रूढ़िवादी था।
 - ☛ औरंगजेब को जिन्दा पीर कहा जाता है।
 - ☛ इसने हिन्दुओं को दान में दी गयी भूमि को (खालसा भूमि) में बदल दिया।
 - ☛ 1667 ई. में औरंगजेब ने झरोखा दर्शन पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
 - ☛ 1680 ई. में औरंगजेब ने तुलादान पद्धति पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
 - ☛ औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबन्ध लगा दिया किन्तु खुद औरंगजेब वीणा का अच्छा जानकार था।
 - ☛ औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके काल में मुगल अपने चरमोत्कर्ष पर थे।
 - ☛ सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार लगभग 337 औरंगजेब के समय में थे।
 - ☛ औरंगजेब दार-उल-हर्ब (काफ़िरो का प्रदेश) को दार-उल-इस्लाम (इस्लाम का देश) में बदलना चाहता था।
 - ☛ धार्मिक मामले की देख-रेख के लिए मोहतसिब नामक अधिकारी को नियुक्त किया गया।
 - ☛ 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गयी और उसे औरंगाबाद में दफनाया गया।
 - ☛ औरंगजेब ने अपनी बेगम दिलराश बानो बेगम के लिए औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनाया। इसे द्वितीय ताजमहल तथा ताजमहल की घटिया नकल कहा जाता है।
 - ☛ औरंगजेब के मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया। क्योंकि औरंगजेब के बाद कोई भी शासक योग्य नहीं था।
- Note :-** MBT (मोहम्मद बिन तुगलक) तथा औरंगजेब की दोषपूर्ण दक्षिण भारत की नीति, इनके साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

उत्तर मुगलकाल

- ☛ औरंगजेब के बाद के काल को उत्तर मुगल काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में कोई भी शासक योग्य नहीं था।

उत्तरकालीन मुगल सम्राट	
नाम	कार्यकाल
बहादुर शाह प्रथम	1707-1712 ई.
जहाँदार शाह	1712-1713 ई.
फर्रुखसियर	1713-1719 ई.
मुहम्मद शाह	1719-1748 ई.
अहमदशाह बहादुर	1748-1754 ई.
आलमगीर द्वितीय	1754-1758 ई.
शाहआलम द्वितीय	1759-1806 ई.
अकबर द्वितीय	1806-1837 ई.
बहादुर शाह द्वितीय /जफर	1837-1857 ई.

बहादुर शाह (1707-12 ई.)

- ☛ इसे शाह-ए-बेखबर के नाम से जाना जाता था क्योंकि इसे अपने राज्य के कुल क्षेत्रफल के बारे में भी जानकारी नहीं थी।
- ☛ इसका नाम मुअज्जम था।
- ☛ यह जिस वर्ष शासक बना उस वर्ष उसकी आयु 63 वर्ष थी। अतः यह सबसे अधिक उम्र में शासक बना था।
- ☛ यह अन्तिम मुगल शासक था जिसके बारे में कुछ अच्छा कहा जा सकता है।
- ☛ बहादुर शाह ने सिखों के 10वें गुरु गोबिंद सिंह के साथ मेल-मिलाप के संबंध स्थापित किये एवं उन्हें संतुष्ट करने के लिए गुरु के सम्मान में उच्च मनसब प्रदान किया।
- ☛ इसने राजा जयसिंह को सवाई राजा का उपाधि से सम्मानित किया था।
- ☛ 1712 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।

जहाँदार शाह (1712-13 ई.)

- ☛ इसे लम्पट मुख कहा जाता था, क्योंकि यह अत्यधिक दान देता था।
- ☛ इसने आमेर के राजा जयसिंह को मिर्जा राजा सवाई जयसिंह की पदवी दी तथा मालवा का सूबेदार बनाया।
- ☛ यह सैयद बन्धु के सहायता से शासक बना था।
- ☛ सैयद बंधु सैयद हसन अली खान और सैयद अब्दुल्लाह नामक दो भाई थे।

Remark : सैय्यद बन्धु को नृप (राजा) निर्माता कहा जाता है।

फर्रुखसियर (1713-1719 ई.)

- ☛ इसने सैयद बन्धुओं की सहायता से जहाँदार शाह की हत्या कर दी।
- ☛ इसे घृणित कायर कहा जाता है। क्योंकि इसने शासक बनने के लिए जहाँदार शाह की हत्या कर दिया था।
- ☛ फर्रुखसियर पहला मुगल सम्राट था जिसका राज्याभिषेक पटना (बिहार) में 1713 ई. में हुआ था।
- ☛ 1717 ई. में फर्रुखसियर को चेचक हो गया था जो ठीक नहीं हो पा रहा था।
- ☛ एक अंग्रेज डॉ॰ हेमिल्टन ने उसका इलाज किया जिससे की वह ठीक हो गया। अतः वह खुश होकर अंग्रेजों को बंगाल के हित में ₹ 3000 प्रतिवर्ष कर लेकर व्यापार करने की छूट दे दिया। इसे इतिहास में अंग्रेजी शासन का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। मैग्नाकार्टा का अर्थ होता है बहुत बड़ा थोखा पत्र जिससे कि पूरी स्थिति बदल जाए।
- ☛ 1717 ई. में ही इसने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ से एक संधि किया और क्षत्रपति के पद को (मराठा राज्य) मान्यता दिया। इस संधि को मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।

मोहम्मद शाह (1719–48 ई.)

- इसे रंगीला बादशाह कहा जाता है, क्योंकि इसे नाच गाना अत्यधिक पसन्द था।
- इसका मूल नाम रौशन अख्तर था। इसके समय मुगल साम्राज्य का बिखराव तेजी से प्रारम्भ हो गया और इसी क्रम में मुर्शीद कुली खां ने स्वतन्त्र बंगाल, शआदत खां स्वतन्त्र अवध निजामूल मुल्क ने स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना कर दिया।
- 1737 ई. में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने मात्र 500 घुड़सवार लेकर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया और मोहम्मद शाह से अत्यधिक धन ले लिया और उससे यह वचन दिया की विदेशी आक्रमण के समय वह उसकी मदद करेगा।
- 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। इसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए शआदत खान ने प्रेरित किया था। नादिर शाह कोहिनूर हीरा तथा मयूर सिंहासन को अपने साथ लेकर चला गया। इस प्रकार मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।
- 1748 ई. में मोहम्मद शाह की मृत्यु हो गयी।

अहमद शाह (1748–54 ई.)

- इसके समय पहली बार अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. में पंजाब पर आक्रमण किया। इसके समय मुगल अर्थ व्यवस्था इतनी कमजोर हो गयी कि अपने सैनिकों तथा अधिकारियों को वेतन देने के लिए मुगल दरबार के सामानों की बिक्री करना पड़ा।
- इसके समय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और इसे अंधा बनाकर जेल में डाल दिया।

आलमगीर-II (1754–59 ई.)

- इसके समय 1757 ई. में प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में लार्ड क्लाइव ने सिराजुद्दौला को पराजित कर दिया।
- इस युद्ध के बाद अंग्रेजों को भारत में शासन करने का एक सुनहरा मौका मिल गया।

शाह आलम-II (1759–1817 ई.)

- उत्तर मुगलकाल में इसका कार्यकाल सबसे लम्बा था। इसके समय 1761 ई. में पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। इस युद्ध में अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को पूरी तरह पराजित कर दिया।
- इसी के समय 1764 ई. में बक्सर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो कर रहा था। हेक्टर मुनरो ने शाह आलम-II के नेतृत्व में बनी त्रिगुट सेना को पराजित कर दिया।

- इलाहाबाद की संधि (1765 ई.) के तहत शाहआलम-II ने अंग्रेजों को बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा की दिवानी (राजस्व कर) सौंप दी। इसी प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इलाहाबाद के संधि के तहत ही शाह आलम-II को अंग्रेजों का पेंशन भोगी बना दिया गया और अंग्रेजों ने शाहआलम-II को अपने संरक्षण में ले लिया।

अकबर-II (1817–37 ई.)

- यह अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बनने वाला पहला मुगल शासक था। यह भी अंग्रेजों का पेंशन भोगी था। अंग्रेजों ने इसके पेंशन को कम कर दिया। अतः इसने अपने पेंशन को बढ़वाने के लिए राम मोहन राय को लंदन भेजा और उन्हें राजा की उपाधि दिया। अतः वे राजा राम मोहन राय के नाम से मशहूर हो गये।

बहादुर शाह-II (जफर) (1837–57 ई.)

- यह जफर नाम की पत्रिका लिखता था, जिस कारण इसका नाम बहादुर शाह जफर पड़ा।
- यह भी अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बना।
- इसने 1857 ई. की क्रांति में भारतीय सैनिकों का नेतृत्व किया था।
- इस क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने इसे हुमायूँ के मकबरे के समीप पकड़ लिया और उसके सामने उसके दोनों बेटों की हत्या कर दिया और उसे वर्मा की राजधानी रंगून में निर्वासित कर दिया। जहाँ 1862 ई. में अंतिम मुगल सम्राट की मृत्यु हो गई।
- रंगून में ही बहादुर शाह जफर का मकबरा है।
- बहादुर शाह जफर अपने जीवन काल में ही दिल्ली में अपना मकबरा बनवाया था। किन्तु यह मकबरा खाली रह गया, क्योंकि बहादुर शाह को रंगून भेज दिया।
- बहादुर शाह जफर अंतिम मुगल शासक था।

मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- मुगलवंश की शुरुआत बाबर से हुई। किन्तु बाबर अधिक समय तक शासन नहीं किया और जितना समय शासन किया। वह युद्ध में फंसा रहा। अतः बाबर ने प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- हुमायूँ की शुरुआत का शासन अच्छा था। किन्तु शेरशाह ने उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और जब हुमायूँ लौटा तो कुछ ही दिन के बाद उसकी मृत्यु हो गयी। अतः उसने भी प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की वास्तविक शुरुआत अकबर के समय में हुआ। अकबर ने लगभग सभी क्षेत्र में सुधार किया।
- भूमि सुधार के क्षेत्र में अकबर ने टोडरमल के सहयोग से आइने दहशाला पद्धति लाया। जो दस वर्षों के लिए थी।
- अकबर ने सैन्य क्षेत्र में एक नई व्यवस्था मनसबदारी व्यवस्था लाया।

- ☛ अकबर ने धर्म निरपेक्षता की नीति अपनाते हुए शासन किया।
- ☛ अकबर ने अपनी राजधानी आगरा से फतेहपुर सिकरी बनवायी।
- ☛ अकबर ने राजपूत नीति के तहत राजपूतों को भी राजा स्वीकार किया।
- ☛ अकबर किसी भी व्यक्ति को कोई पद अधिक समय तक नहीं देता था। उसने सर्वाधिक प्रधानमंत्री बदले हैं।
- ☛ जहांगीर ने प्रशासनिक क्षेत्र में सुधार के लिए न्याय व्यवस्था पर अत्यधिक बल दिया और न्याय की एक जंजीर टंगवाई। जहांगीर ने सैन्य क्षेत्र में नई व्यवस्था सिंह-अशपा तथा दो-अशपा नामक प्रणाली लाया। जिस सैनिक के पास दो घोड़े रहते थे उन्हें दो-अशपा तथा जिसके पास दो से अधिक घोड़े रहते थे उन्हें सिंह-अशपा कहा गया।
- ☛ शाहजहां के समय विद्रोह बहुत अधिक हुआ जिस कारण वह प्रशासनिक सुधार पर ध्यान नहीं दे सका।
- ☛ औरंगजेब ने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाई तथा इसने पुनः जजिया कर प्रारम्भ किया। इसने संगीत तथा चित्रकला पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- ☛ औरंगजेब ने मुहत्तसीब नामक एक अधिकारी की नियुक्ति किया। जो यह देखता था कि लोग शरीयत (इस्लाम) के अनुसार जी रहे हैं या नहीं।
- ☛ फर्रुखशियर ने मुगलों के पतन का रास्ता खोल दिया क्योंकि इसने मराठाओं एवं अंग्रेजों को मान्यता दे दिया।
- ☛ उत्तर मुगल काल में मोहम्मद शाह ने जजिया कर को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
- ☛ शाह आलम-II ने इलाहाबाद की संधि के तहत बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को दे दी। इसी के समय मुगल अंग्रेजों के अधीन होने लगा और बहादुर शाह द्वितीय के समय मुगलों के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- ☛ भवन, मकबरा तथा बाग बगीचे के निर्माण की विभिन्न शैलियों को स्थापत्य या वास्तुकला कहते हैं।
- ☛ मुगलों के आने से ही भारत में गुम्बज तथा मेहराब बनना प्रारंभ हुआ।
- ☛ मुगल वास्तुकला का प्रारम्भ बाबर के समय से ही चालू हो गया था।
- ☛ बाबर को चार बाग शैली का जनक माना जाता है। चारबाग शैली बाबर ने आगरा के अरामबाग में निर्माण करवाया था।
- ☛ बाबर ने बाग बगीचे के सिंचाई के लिए नहरों का प्रयोग करता था। बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- ☛ हुमायूँ ने दिल्ली में दीनपनाह नामक पुस्तकालय का निर्माण करवाया, जबकि हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा बनवाया। इसे लाल-ताजमहल के नाम से जाना जाता है।

- ☛ अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा, आगरा का लालकिला तथा इलाहाबाद का किला का निर्माण करवाया।
- ☛ जहांगीर के समय नूरजहां ने एतमातुद्दौला का मकबरा बनवाया।

Remark :— सफेद बेदाग संगमरमर तथा इटली की पिप्प्रा-डोरा शैली का प्रथम प्रयोग इसी मकबरा निर्माण में हुआ था।

Remark :— मुगलकालीन स्थापत्य कला में गोलगुम्बद से युक्त भवनों का निर्माण हुआ।

- ☛ शाहजहां स्थापत्य कला में अधिक रुचि लेता था। इसके काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहते हैं। इसने दिल्ली में जामा मस्जिद तथा लाल किला का निर्माण करवाया।
- ☛ इसने आगरा में ताजमहल का निर्माण कराया। ताजमहल भारत का सबसे बड़ा मकबरा है।
- ☛ पिप्प्रा-डोरी शैली का प्रयोग ताजमहल में भी हुआ है।
- Remark :—** आगरा के किला के अंदर स्थित मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने करवाया, जबकि दिल्ली में लाल किला में स्थित मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।
- ☛ औरंगजेब ने औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनवाया। जिसे द्वितीय ताजमहल या ताजमहल का छटिया नकल कहते हैं।
- ☛ अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने दिल्ली में अपना मकबरा स्वयं बनवाया था।

मुगलकालीन चित्रकला

- ☛ मुगलकालीन चित्रकला बाबर के समय प्रारम्भ हुई थी। बाबर के दरबार में वेहजाद नामक चित्रकार रहते थे जिन्हें पूर्व का राफेल कहा जाता था।
- Remark :—** राफेल एक यूरोपीय चित्रकार था। जिसने पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था।
- ☛ हुमायूँ के दरबार में मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद नामक चित्रकार रहते थे।
- ☛ अकबर के दरबार में दसवन्द तथा बसावन नामक प्रसिद्ध चित्रकार थे। दसवन्द सबसे प्रमुख चित्रकार रहते थे। जिसकी सबसे प्रमुख चित्रकारी खानदाने तैगुरिया एवं तुतीनामा थी।
- ☛ दसवंत द्वारा बनाने गये चित्र रज्मनामा नामक पांडुलिपि में मिलते हैं। इस पांडुलिपि को मुगल चित्रकला के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है।
- ☛ जहांगीर के काल को चित्रकला का स्वर्ण काल कहा जाता था। इसके दरबार में विसन दास मोहर तथा मंसुर नामक चित्रकार रहते थे।
- ☛ शाहजहां के समय चित्रकला का विकास कम हुआ। इसके समय सर्वाधिक विकास स्थापत्य कला में हुआ।
- ☛ औरंगजेब ने चित्रकला पर यह कहकर प्रतिबन्ध लगा दिया कि चित्रकला इस्लाम के खिलाफ है। साथ ही उसने सिकन्दरा में स्थित अकबर के मकबरा से चित्रकला को मिटवा दिया।

मुगलकाल में आए विदेशी यात्री

1. **राल्फ फिन्च**— यह एक अंग्रेज था जो अकबर के समय आया था। इसी ने अकबर को गुजरात अभियान के समय समुद्र दर्शन करवाया था।
2. **कैप्टन हाकिंस**— यह भी एक अंग्रेज था जो 1608 ई. में जहांगीर के दरबार में आया। इसका उद्देश्य जहांगीर से व्यापारिक छूट प्राप्त करना था। किन्तु जहांगीर ने इसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु इसके योग्यता से खुश होकर इसे खान की उपाधि दिया। अतः इसे इंग्लिश खान कहते हैं।
3. **टामस रो**— यह भी एक अंग्रेज था। 1615 ई. में जहांगीर के समय आया। सर्वप्रथम इसी को जहांगीर ने कुछ व्यापारिक छूट दिया था।
4. **पिएत्रा डेला वेले**— यह इटली का रहने वाला था। ये जहांगीर के समय आया था।
5. **जीन बैप्टिस्ट ट्रेवर्नियर**— यह फ्रांस का रहने वाला था और शाहजहां के समय आया था। यह अंग्रेज था तथा पेशे से जौहरी (सोनार) था।
6. **वर्नियर**— यह एक अंग्रेज था। जो शाहजहां तथा औरंगजेब दोनों के समय आया था। इसने मुगलकाल में उत्तराधिकार के युद्ध को देखा था।
7. **मनूची**— यह एक अंग्रेज था। जो औरंगजेब के समय आया था। यह पेशे से एक तोपची (तोप चलाने वाला) था। जिसे औरंगजेब ने इसे अपने सेना में भर्ती कर लिया था।

मुगल शासकों का मकबरा

बाबर	पहले आगरा में, वर्तमान में काबुल में
हुमायूँ	दिल्ली
जहांगीर	लाहौर (सहदरा)
अकबर	सिकन्दरा (फतेहपुर सिकरी)
शाहजहां	आगरा (ताजमहल)
औरंगजेब	औरंगाबाद
बहादुर शाह जफर	रंगून (वर्मा)

- ☛ शेष मुगल राजाओं का मकबरा दिल्ली में हुमायूँ के मकबरा के समीप है।

मुगल शासकों के असली नाम

बाबर	जहीरुद्दीन-मुहम्मद-बाबर
हुमायूँ	नसीरुद्दीन-मुहम्मद-हुमायूँ
जहांगीर	नुर-उ-द्दीन-मुहम्मद-जहांगीर
अकबर	जलालुद्दीन-मुहम्मद-अकबर
शाहजहां	शिहाबुद्दीन-मुहम्मद-शाहजहां
औरंगजेब	आलमगीर-औरंगजेब
बहादुर शाह जफर	मोअज्जम
मोहम्मद शाह	रौशन अख्तर

मुगलकालीन विभाग

वजीर	राजस्व विभाग तथा प्रधानमंत्री
मीर बख्शी	सैन्य विभाग
मीर बहर	नौ-सेना तथा जहाज
मुहर्तासव	नैतिक आचरण तथा धार्मिक नीति
रूद्र-उस-सुदूर	धार्मिक विभाग
काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग
मुस्ताफा-ए-मुबालिक	लेखा विभाग
दीवाने-खालिसा	खालसा भूमि (सरकारी भूमि)

मुगलकालीन प्रमुख पुस्तक

पुस्तक (ग्रंथ)	लेखक
1. तुजुक-ए-बाबरी	— बाबर
2. बाबरनामा	— अब्दुल रहीम (खन-ए-खाना)
3. हुमायूँनामा	— गुलबदन बेगम (बहन)
4. अकबरनामा	— अबुल फजल
5. तुजुक-ए-जहांगीरी	— जहांगीर + मोतमिद खान
6. शाहजहांनामा	— इनायत खान
7. तबकात-ए-अकबर	— निजामुद्दीन अहमद

इस पुस्तक में दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगलकाल तक का इतिहास है।

मुगलकालीन फारसी में अनुवादित पुस्तक

1. महाभारत — बदायूनी, अबुल फजल, फैजी
 2. रामायण — बदायूनी
 3. अथर्ववेद — बदायूनी + हाजी इब्राहिम
 4. लीलावती — फैजी
 5. नल-दमयंती — फैजी
 6. राजतरंगिणी — शाहमुहम्मद सहबादी
 7. उपनिषद् — दारा-शिकोह
 8. गीता — दारा-शिकोह
- ☛ मुगल सल्तनत 1526 से 1857 तक रही—
- इसे दो भागों में बाँटते हैं—
- (i) उन्नति का काल (1526-1707)
 - (ii) अवनति का काल (1707-1857)



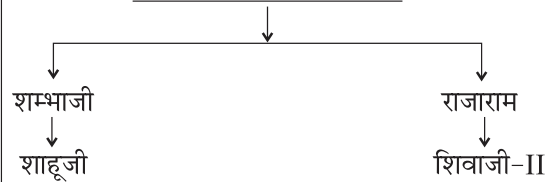
मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

- ☛ मुगल सम्राज्य के विघटन के पश्चात कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई जिनमें से मराठा साम्राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली था।
- ☛ मराठों के पूर्वज राजस्थान के सिसोदिया वंश के सूर्यवंशी राजपूत थे।
- ☛ मराठा सम्राज्य की राज भाषा मराठी थी।

शिवाजी

- ☛ मराठा साम्राज्य की स्थापना शिवाजी ने किया था।
- ☛ शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को पुना के निकट शिवनेर नामक स्थान पर हुआ था।
- ☛ इनके पिता शाहजी भोंसले तथा माता जीजाबाई थे एवं शिवाजी की सौतेली माँ तुकाबाई थी।
- ☛ इनके राजनीतिक गुरु दादाजी कोण्ड देव थे तथा इनकी आध्यात्मिक/धार्मिक गुरु समर्थ रामदास थे।
- ☛ शिवाजी के पिता (शाहजी भोंसले) पहले अहमदनगर के शासक के यहाँ नौकरी पर थे। जब अहमदनगर पर मुगलों का अधिकार हो गया तो शाहजी भोंसले बीजापुर के शासक के यहाँ नौकरी करने लगे और अपनी अपेक्षित पत्नी जीजाबाई तथा पुत्र शिवाजी को पुना की जागीर सौंप दिया।
- ☛ शिवाजी के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव उनके माता जीजाबाई तथा दादाजी गुरु कोण्ड देव का पड़ा।
- ☛ शिवाजी दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन के स्थान पर हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे।
- ☛ शिवाजी ने रायगढ़ में अपनी राजधानी स्थापित किया।
- ☛ शिवाजी को पहाड़ी चूहा के नाम से जाना जाता है।
- ☛ शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति या छापामार पद्धति का प्रयोग अपनी युद्ध अभियान में किया। इस पद्धति में रुक-रुक कर, छिप-छिप कर तथा अचानक हमला किया जाता था।
- ☛ शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति को अहमद नगर के शासक मलिक अम्बर से सीखा था।
- ☛ शिवाजी ने अपना प्रथम सैन्य अभियान 1643 ई. में बीजापुर के विरुद्ध किया और बीजापुर के सेनापति अफजल खां की हत्या कर दी।
- ☛ शिवाजी ने पनहाला, कोल्हापुर व पुरंदर का किला भी जीत लिया।
- ☛ 1657 ई. में शिवाजी की मुलाकात औरंगजेब से हुयी। शिवाजी, औरंगजेब से संधि करना चाहते थे किन्तु औरंगजेब ने स्वीकार नहीं किया।
- ☛ औरंगजेब ने शिवाजी को पराजित करने के लिए कई अभियान किये।
- ☛ शिवाजी ने औरंगजेब के मामा शाइस्ता खां को पराजित कर दिया।
- ☛ 1664 ई. में शिवाजी ने सूरत को पहली बार लूटा
Remark :- सूरत मुगलों के समय बहुत बड़ा औद्योगिक केन्द्र था।
- ☛ सूरत को जब शिवाजी ने लूटा तो औरंगजेब शिवाजी के विरुद्ध एक बड़ा अभियान भेजा। इस अभियान का नेतृत्व राजा जय सिंह कर रहे थे। इस अभियान में शिवाजी पराजित हो गए।
- ☛ शिवाजी तथा जय सिंह के बीच 5 जून, 1665 ई. पुरन्दर की संधि हुई। पुरन्दर की संधि के तहत शिवाजी को जीते गए 35 किलों में से 23 किला मुगलों को लौटाना पड़ा। इस संधि के तहत शिवाजी ने अपने पुत्र शम्भाजी को औरंगजेब की सेवा में भेजा और खुद अगले वर्ष 1666 ई. में औरंगजेब से मिलने आगरा पहुँचे, किन्तु औरंगजेब ने धोखा से शिवाजी को जयपुर महल (आगरा) में कैद कर लिया।
- ☛ शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर (1666 ई. में) फलों की टोकरी में बैठकर जयपुर महल से भाग गए।
- ☛ 1670 ई. में शिवाजी ने सूरत को दुबारा लूटा।
- ☛ 1674 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ के किला में अपना राज्याभिषेक करवाया और छत्रपति की उपाधि धारण किया।
- ☛ शिवाजी का राज्याभिषेक गंगा भट्ट (विशेश्वर) नामक पण्डित ने करवाया। गंगा भट्ट मूल रूप से काशी (बनारस) का रहने वाला था।
- ☛ औरंगजेब कभी भी शिवाजी को पराजित नहीं कर सका अन्त में 1679 ई. में औरंगजेब ने पुनः जजिया कर लगा दिया। जजिया कर का विरोध करने वाला एक मात्र शासक शिवाजी थे। (विवश होकर औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि दिया।)
- ☛ शिवाजी का अंतिम सैन्य अभियान कर्नाटक के विरुद्ध (1677 ई.) था।
- ☛ प्रशासन में शिवाजी की सहायता और परामर्श के लिये जो 8 मंत्रियों की परिषद होती थी, उसे अष्टप्रधान कहा जाता था।
- ☛ 12 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी के उत्तराधिकारी



शम्भाजी (1680-1689 ई.)

- शिवाजी के मृत्यु के बाद शम्भाजी जो पनहाला के किला में कैद थे, वे वहाँ से भागकर मराठा साम्राज्य के छत्रपति बनें।
- 1686 ई. में शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को शरण दे दिए जिस कारण औरंगजेब ने शम्भाजी को यातना देकर मार दिया और उनके पुत्र शाहू जी को बन्दी बना लिया।

राजाराम (1689-1700 ई.)

- शम्भाजी के बाद राजा राम शासक बना।
- राजाराम ने एक नए पद **प्रतिनिधि** का सृजन किया। इस प्रकार शिवाजी के अष्टप्रधान में प्रतिनिधि सहित अब नौ मंत्री हो गये।
- 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी-II तथा ताराबाई (1700-1707 ई.)

- राजाराम की पत्नी ताराबाई ने अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी-II को शासक बना दिया और खुद उसकी अंगरक्षक बन गयी।
- शाहूजी जो मुगल दरबार में कैद थे (शम्भाजी का पुत्र) और बहादुर शाह ने मराठा शक्ति को कमजोर करने के लिए शाहू जी को जेल में ही छोड़ दिया।
- 12 अक्टूबर 1707 ई. में शाहू तथा ताराबाई के मध्य खेड़ा का युद्ध हुआ जिसमें शाहू, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजयी हुआ।

शाहू (1707-1749 ई.)

- शाहूजी ने शिवाजी-II को पराजित करके छत्रपति (शासक) बन गया।
- शाहू ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया। इस नियुक्ति के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- 1749 ई. में शाहूजी की मृत्यु हो गयी। इनके मृत्यु के बाद मराठा प्रशासन की सारी शक्तियाँ पेशवा के हाथ में आ गयी।
- **पेशवा का काल (1713-1818 ई.)**
- पेशवा वंशानुगत था, इसका निवास पूणे था।

बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)

- इन्हें पेशवा शाहू जी ने बनाया इन्ही के सहयोग से शाहूजी छत्रपति बने थे।
- शाहूजी ने इन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर मुगल शासक फर्रुखशियर के दरबार में भेजा (1717 ई.) था। फर्रुखशियर ने छत्रपति के पद को मान्यता दे दिया। इस संधि को मराठा शासन का मैगनाकार्टा कहा जाता है।
- 1720 ई. में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु हो गयी।

बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)

- यह बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे, इन्हें लड़ाकू पेशवा भी कहा जाता है।
- शिवाजी के बाद गुरिल्ला पद्धति का सर्वाधिक प्रयोग बाजीराव प्रथम ने किया।
- बाजीराव प्रथम ने 1728 ई. में हैदराबाद के शासक निजाम-उल-मुल्क को हराकर उनसे मुंशी शिवगाँव की संधि किया।
- बाजीराव प्रथम ने छत्रपति शाहू को संबोधित करते हुए कहा कि “आओ हम इस पुराने वृक्ष के जड़ों पर वार करें, शाखाएँ तो स्वयं गिर पड़ेंगे।” इस पर शाहूजी ने यह प्रतिक्रिया दिया कि आप निःसंदेह ही एक योग्य पिता के एक योग्य पुत्र हैं। आपके प्रयासों से मराठा साम्राज्य का पताका कटक से अटक तक लहराए जाएंगे।
- बाजीराव प्रथम ने 1737 ई. में मात्र 500 घुड़सवार लेकर मुगल शासक मोहम्मद शाह पर आक्रमण कर दिया और दिल्ली को पूरी तरह लूटा और मोहम्मद शाह से एक संधि की जिसके तहत 5 लाख प्रति वर्ष लेकर विदेशी आक्रमण के समय सैन्य मदद देने का वचन दिया।
- 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहे जाने वाले नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया किन्तु बाजीराव ने कोई भी सैन्य मदद नहीं दिया।
- बाजीराव ने पुर्तगालियों से सालसेट तथा बसीन (महल) छीन लिया।
- बाजीराव हिन्दू पद पादशाही की स्थापना करना चाहते थे।
- बाजीराव का सम्बन्ध मस्तानी नामक एक मुस्लिम महिला से था।
- शाहू जी बाजीराव-I के समय ही पूरे मराठा साम्राज्य को पांच परिसंघ में बांटा था—

(i)	बड़ौदा	गायकवाड़ (प्रशासक)
(ii)	पुना	पेशवा
(iii)	नागपुर	भोसले
(iv)	इन्दौर	होल्कर
(v)	ग्वालियर	सिंधिया

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।

- इनके समय मराठा साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ। यही कारण है कि बालाजी बाजीराव को शिवाजी के बाद मराठा का दुसरा संस्थापक कहा जाता है।
- 1749 ई. में छत्रपति शाहूजी की मृत्यु हो गयी और संगोली के संधि के तहत छत्रपति के पद को समाप्त कर दिया गया और मराठा साम्राज्य पूरी तरह पेशवा के अधीन हो गया।
- 1752 ई. में झलकी की संधि के द्वारा हैदराबाद के निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- 14 जनवरी, 1761 ई. को मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दली ने मराठों के साथ पानीपत का III युद्ध किया। इस युद्ध में मराठा बुरी तरह पराजित हो गए।
- इस युद्ध में मराठों की तरफ से वास्तविक सेनापति सदाशिव राव भाउ थे, जबकि नाममात्र का सेनापति विश्वासराव भाउ था।
- मराठों को पराजय की खबर सुनकर पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गयी।
- इतिहासकार सिडनी ओवेन ने कहा है कि पानीपत का III युद्ध यह सिद्ध नहीं कर सका कि भारत में किसका शासन होगा लेकिन यह जरूर सिद्ध कर दिया कि भारत में किसका शासन नहीं होगा।

माधव राव-II (1773-1795 ई.)

- यह अल्पायु था। अतः इसे सहायता देने के लिए बारभाई परिषद का गठन किया गया। यह परिषद 12 मंत्रियों का एक समूह था। इसमें सबसे प्रमुख नाना फडनवीस तथा महादजी सिंधिया थे।
- रघुनाथ राव (रघोवा) ने खुद पेशवा बनने के लिए अंग्रेजों के साथ 1775 ई. में सूरत की संधि कर ली और अंग्रेजों को उपहार में बेसीन तथा सालसेट दे दिया किन्तु बाद में अंग्रेज अपने वादे से मुकर गये।
- अंग्रेजों तथा मराठों के बीच यही तनाव आंग्ल मराठा युद्ध का रूप लिया और 3 आंग्ल मराठा युद्ध हुआ।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- यह युद्ध महादजी सिंधिया के अध्यक्षता में सालाबाई के संधि के तहत समाप्त हुआ।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बारभाई परिषद को मान्यता दिया तथा माधव नारायण-II को पेशवा स्वीकार किया।
- इस युद्ध के दौरान बंगाल के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स थे।
- 1795 ई. में महादजी सिंधिया तथा माधव नारायण-II की मृत्यु हो गयी और अगला पेशवा बाजीराव-II बना।

बाजीराव-II (1795-1818 ई.)

- यह अंतिम पेशवा था। इसके समय II आंग्ल मराठा युद्ध हुआ। इस पेशवा ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- यह युद्ध बेसीन की संधि के तहत समाप्त हुआ। इस संधि के तहत पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इस युद्ध के समय बंगाल के गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलजली थे।
- इस संधि को भोंसले, होल्कर तथा सिंधिया ने स्वीकार नहीं किया और यह III आंग्ल मराठा युद्ध का कारण बना।
- अंग्रेजों ने भोंसले के साथ 1803 ई. में देवगाँव की संधि, 1803 में सिन्धिया से सुर्जी- अर्जनगाँव की संधि तथा 1805 ई. में होल्कर से राजपुरघाट की संधि की।

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818 ई.)

- यह युद्ध पूणे की संधि के तहत समाप्त हुआ और इस युद्ध के समाप्ति के बाद पेशवा बाजीराव-II को अंग्रेजों ने पेंशन भोगी बना दिया गया।
 - इस युद्ध के समय बंगाल के गवर्नर जनरल लॉर्ड हैस्टिंग्स थे।
 - अंग्रेजों ने अंतिम रूप से पेशवा को किर्की के युद्ध में पराजित कर उसे पेंशन देकर कानपुर के पास बिठूर भेज दिया।
 - इसी पेशवा बाजीराव-II का दत्तक पुत्र (गोद लिया हुआ) नाना साहब था। बाजीराव-II के बाद इसे भी पेंशन दिया जा रहा था। किन्तु लॉर्ड डलहौजी ने उनका पेंशन बन्द कर दिया। यही कारण था कि नाना साहब 1857 ई. के विद्रोह में भाग लिये।
- **तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध के बाद हुई संधियाँ-**

क्षेत्र	प्रशासक	सन्धि
1. पूना	पेशवा	पूना की सन्धि
2. नागपुर	भोंसले	नागपुर की सन्धि
3. इन्दौर	होल्कर	मंदसौर की सन्धि
4. ग्वालियर	सिंधिया	ग्वालियर की सन्धि

- बड़ौदा का गायकवाड़ के साथ कोई संधि नहीं की गयी क्योंकि यह तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में शामिल नहीं था। इसने स्वतः ही अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
 - 1818 ई. आते-आते मराठा शक्ति समाप्त हो गयी और मराठा क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।
- **पिण्डारी**
- पिंडारी हिंदू-मुस्लिम का संयुक्त संगठन था। इनमें सांप्रदायिक एकता थी।
 - इनके प्रमुख नेता वासिल मुहम्मद, करीम खाँ, चीतू थे।
 - यह मराठा के छोटी टुकड़ी थी यह जंगलों में रहती थी तथा छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) करके अंग्रेजों से लड़ती थी।
 - मेल्लकम ग्रे नामक इतिहासकार ने पिण्डारियों को मराठों का कुत्ता कहा है।
 - लार्ड हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों का अन्त कर दिया।

मराठा सैन्य व्यवस्था

- ☛ मराठों का मुगलों से संघर्ष शाहजहां के काल से ही प्रारम्भ हो गया था।
- ☛ मराठों के पास 250 किला था। जिसमें से 23 किला को शिवाजी ने पुरन्दर की संधि के तहत मुगलों को दे दिया।
- ☛ शिवाजी ने पुर्तगालियों से लगभग 200 तोप खरीदे थे। शिवाजी ने कर्नाटक के कोलावा में नौसेना का गठन किया था।
- ☛ मराठा सैनिकों को धार्मिक स्थल, बच्चे, महिला तथा आम नागरिकों पर आक्रमण पर निषेध था।
- ☛ शिवाजी के घुड़सवारों को दो भागों में बांटा जाता है-

1. बरगीर

- ☛ यह स्थायी घुड़सवार थे और नियमित रूप से सेना में रहते थे।

2. सिलहदार

- ☛ यह अस्थायी घोड़सवार थे। यह युद्ध के समय सेना में रहते थे।
- ☛ पैदल सैनिक = पागा

मराठा प्रशासन व्यवस्था

- ☛ मराठा प्रशासन की शुरुआत शिवाजी ने की। उन्होंने प्रशासन के लिए 8 मंत्रियों की नियुक्ति किया जिन्हें संयुक्त रूप से अष्ट प्रधान कहा जाता था।
- ☛ मराठा प्रशासन में सबसे बड़ा पद छत्रपति का था उसके बाद पेशवा का पद था।

अष्ट प्रधान

- शिवाजी की सहायता और परामर्श हेतु आठ मंत्रियों की परिषद को ही अष्ट प्रधान कहा गया। प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होते थे। इनके पद अनुवांशिक नहीं होते थे। इनकी नियुक्ति के अधिकार शिवाजी के पास था।
- 1. **पेशवा**— यह प्रधानमंत्री होते थे। यह छत्रपति के बाद सबसे महत्वपूर्ण पद था इसका कार्य छत्रपति की अनुपस्थिति में प्रशासन की देख रेख करना।

2. **मजुमदार/अमात्य**— यह वित्त मंत्री का पद था जो राजस्व का लेखा जोखा रखता था।
3. **सर-ए-नौबत**— यह सेनापति का प्रमुख पद होता था।
4. **सुमंत**— यह विदेश मंत्री का पद था। इसका कार्य विदेशी राज्यों से तालमेल बनाना था।
5. **वाक्यानवीस**— यह सूचना गुप्तचर एवं संधि करने वाला मंत्री था।
6. **चिटनिस**— इसका कार्य पत्राचार व्यवस्था को देखना था।
7. **पण्डित राव**— इसका कार्य धार्मिक मामलों की देख-रेख करना था।
8. **न्यायाधीश**— इसका कार्य न्याय व्यवस्था की देख-रेख करना।

Note :- शम्भाजी के समय ही अष्टप्रधान का विघटन हो गया।

मराठा राजस्व व्यवस्था

- ☛ मराठों की कोई व्यवस्थित राजस्व व्यवस्था नहीं थी।
- ☛ शिवाजी का राजस्व व्यवस्था मलिक अम्बर के राजस्व व्यवस्था से ली गयी थी। शिवाजी के समय राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत कृषि कर था (भूमिकर)
- ☛ शिवाजी ने भूमिकर को 33% से बढ़ाकर 40% कर दिया।
- ☛ शिवाजी के समय सबसे महत्वपूर्ण कर चौथ तथा सरदेश मुखी था।
- **चौथ**
- ☛ यह कर शिवाजी अपने पड़ोसी देश से लेते थे। यह कुल कृषि का 1/4 भाग था।
- **सरदेश मुखी**
- ☛ शिवाजी यह कर अपने ही देश की जनता से लेते थे। इस कर को देने वाला इस बात को स्वीकार करता था कि उसके देश के प्रमुख शिवाजी ही हैं।
- ☛ यह कर कुल कृषि के 1/10 भाग पर था।
- ☛ मराठा सम्राज्य की सबसे छोटी इकाई गांव था जिसका प्रधान पटेल होता था।



KHAN SIR